ओ३म्


# पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई ( द्वितीय ) २०१४




महर्षि दयानन्द सरस्वती

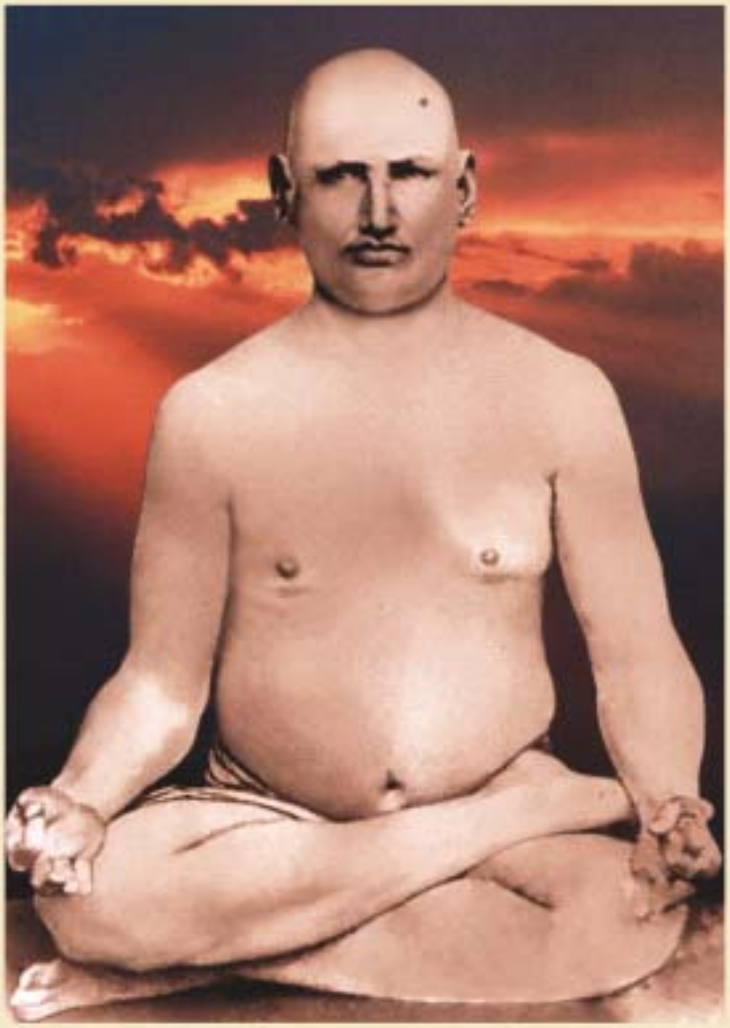

उच्च प्रथम स्थान प्राप्त शिविरार्थीगण।

## वैदिक ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर -३ ( १३ से २० अप्रैल २०१४ )

प्रथम स्थान प्राप्त शिविरार्थीगण।

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र**

**वर्ष : ५६ अंक : १०**
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

**सम्पादक**
प्रो. धर्मवीर

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**-परोपकारी का शुल्क-**
**भारत में**
**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

**विदेश में**
**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

**वैदिक पुस्तकालय :** ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान :** ०१४५-२६२१२७०

*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।*
*संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।*

**RNI. No. ३९५९ / ५९**

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. दो विचार धाराओं की लड़ाई | सम्पादकीय | ०४ |
| २. सुविचार और कुविचार | स्वामी विष्वङ् | ०७ |
| ३. कुछ तड़प-कुछ झड़प | राजेन्द्र जिज्ञासु | ११ |
| ४. ब्रह्माण्ड की यात्रा आधुनिक विज्ञान... | माधव. के. देशपाण्डे | १८ |
| ५. सृष्टि-हमारी दृष्टि में | गंगाप्रसाद उपाध्याय | २२ |
| ६. Sardar Placed China 18 Years Ago | | २७ |
| ७. पुस्तक - परिचय | | ३० |
| ८. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन | | ३१ |
| ९. जिज्ञासा समाधान-६३ | आचार्य सोमदेव | ३४ |
| १०. संस्था-समाचार | | ३८ |
| ११. आर्यजगत् के समाचार | | ४१ |


www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
**- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -**
**www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan**

सम्पादकीय

# दो विचारधाराओं की लड़ाई देशभक्ति और देशद्रोह

ये पंक्तियाँ पाठकों के हाथ पहुँचने तक बहुत बड़े युद्ध का परिणाम आ चुका होगा। जनता अपने विजय उल्लास को प्रदर्शित कर रही होगी। यह चुनाव नहीं भारतीयता और अभारतीयता के मध्य एक संघर्ष है। जिसे समाप्त नहीं समझना चाहिए। यह तो प्रारम्भ है। दोनों पक्षों द्वारा इस चुनावी युद्ध में कोई कमी रखी होगी, इसकी कल्पना करना भी गलत होगा। इसमें किसने क्या गलत किया? क्या सही किया? इसका विश्लेषण आलोचक अगले सालों तक करते रहेंगे। अपने पाठकों और श्रोताओं की जिज्ञासायें शान्त करते रहेंगे। चुनाव देश में स्वतन्त्रता के साथ ही प्रारम्भ हो गये थे। विपक्ष का कोई महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं था, जनता को सत्ता में और नेताओं में भरपूर विश्वास था। कोई ऐसी सरकार और नेता को पराजित करना या बदलने की कोई सोचता भी नहीं था। जो डॉ. लोहिया, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे लोग थे, उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी, अत: सरकार को जैसे भी चलाना चाहा पं. नेहरू चलाते रहे। समय के अनुसार सत्ता पक्ष दुर्बल भी हुआ। उसकी न्यूनता और अपराध देश की जनता के सामने आते भी रहे परन्तु समर्थ विकल्प के अभाव में सत्ता का परिवर्तन होने में बहुत समय लगा, बीच में विपक्ष के एकजुट होने पर सत्ता परिवर्तन हुआ भी परन्तु एकजुटता बनी नहीं रही, अत: सत्ता परिवर्तन शीघ्र हो गया। जो विरोध था वह निष्क्रिय होता गया।

इस बार के चुनाव में विपक्ष तो एकजुट नहीं हो सका परन्तु विचार एकजुट हो गया। चुनाव में कहा गया- यह चुनाव विचारों की लड़ाई है। कांग्रेस ने इसे विचाराधारा की लड़ाई बताते हुए इस देश की विचारधारा अल्पसंख्यक को केन्द्र मानकर प्रस्तुत की। भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा देश की भलाई का सन्देश लिये होने पर भी आजतक साम्प्रदायिकता, फासीवाद, तानाशाही आदि जितने घृणा के अर्थ बताने वाले शब्द हैं, ये सभी शब्द भाजपा के साथ जोड़ दिये गये हैं। पूरे साठ वर्ष जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी और हिन्दू सभी कुछ साम्प्रदायिक हो गया। आजतक इन शब्दों को गालियों की भाँति सहते रहे।

इस मिथक को तोड़ने का कार्य संगठन पार्टी से तो सफलता पूर्वक नहीं हो सका परन्तु गुजरात के मुख्यमन्त्री ने इन गालियों का अर्थ ही बदल दिया। आज जब मुसलमान, ईसाई आदि अल्पसंख्यक आदि को सामने रखकर बात की जाती है तब मोदी ने पहले गुजरात को मुख्य मानकर इस गाली का उत्तर दिया और आज पूरे भारत को केन्द्र में रखकर उसका उत्तर दिया जा रहा है। यही इस चुनाव की मुख्य सफलता है। जो शब्द आजतक साम्प्रदायिक, संकीर्ण, अनुदार अर्थों के साथ घसीटा जाता था वह शब्द आज भारत, भारतीयता, राष्ट्रीयता के अर्थ देने वाला बन गया है।

आज इन्हीं अर्थों के माध्यम से चुनाव का संग्राम हो रहा है। आज अल्पसंख्यक, मुसलमान, ईसाई, दलित की वकालत करने वाले देश राष्ट्र की उपेक्षा, विरोध, अहित करना इनका पोषण करना मान रहे थे, इस कार्य को तथा इन छिपे अर्थों को इस चुनाव ने जनता के सामने खोलकर रख दिया है। धर्म निरपेक्षता के ढोंगी वास्तव में देश के हित की अनदेखी ही नहीं कर रहे थे अपितु जान-बूझकर इसे विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप रहे थे। परोपकारी पत्र की इन्हीं पंक्तियों में ईमानदारी के नाम पर चुनाव लड़ने वाले कैसे देशद्रोहियों का साथ दे रहे थे उनकी चर्चा की है। इस चुनाव में जो लोग गंगा-जमुनी विचारधारा की बात करते हैं वे वास्तव में अमेरिकन-योरोपीय संस्कृति की बात करते हैं। उनके पैसों से इस देश को तोड़ने का काम कर रहे हैं। इस का पर्दाफाश जिस व्यक्ति ने किया उसे देश ने स्वीकार कर लिया है। यही चुनाव की सफलता है। अभी समाचार पत्र में सभी ने पढ़ा है प्रशान्त भूषण अपनी सारी वकालत कश्मीर को भारत से पृथक् करने में खर्च कर रहे हैं। ये वही व्यक्ति है जो पाकिस्तानी दलाल फई के पैसों पर अमेरिका, इंग्लैण्ड, यूरोप की यात्रा में होटलों का आनन्द लेकर कश्मीर के विवाद को लेकर पाकिस्तान का समर्थन कर चुके हैं। इसके दूसरे सदस्य योगेन्द्र यादव का वक्तव्य अभी समाचार पत्रों में छपा है, आप महाशय कहते हैं- कश्मीर से ३७० धारा न हटाकर भारत के सभी प्रदेशों को ३७० का अधिकार देना चाहिए। क्या कोई व्यक्ति राष्ट्र के अस्तित्व को समाप्त करके समाज या देश

का भला कर सकता है। व्यक्ति हो या संस्था, देश हो या समाज, सब का मूल उसके अस्तित्व में टिका है। राष्ट्र हम सबका अस्तित्व है, वह ही नहीं रहा तो न समाज रहेगा, न परिवार। ऐसे लोगों से न अपना भला होगा और न देश का भला होगा।

इसी क्रम में क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि महात्मा गाँधी का पौत्र देश के शत्रुओं के साथ रहता हो, उनका समर्थन करता हो? क्या आप उसे स्वीकार करेंगे? गत दिनों इन्टरनेट पर जो समाचार आपको चौंकाने वाला है वह है महात्मा गाँधी के पौत्र राजमोहन गाँधी का विदेशी शत्रुओं के साथ मिलकर देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त होना। राजमोहन गाँधी जिस संस्था से जुड़े हैं उसका नाम है एम.आर.ए.। इसका नाम बनता है मोरल री आर्ममेण्ट, जिसका अर्थ है नैतिक रूप से सशस्त्र करना, इस संस्था का आजकल नाम इनिशियेटिव्ज़ चेञ्ज है। जिसका अर्थ प्रारम्भिक परिवर्तन होता है। इस प्रसंग को समझने के लिए राजमोहन गाँधी जिस संस्था से जुड़े हैं उस संस्था का उद्देश्य और कार्य को समझने की आवश्यकता है। यूरोपीय संघटन और विशेष रूप से चर्च के सहयोगी संगठनों के नाम ठगी के काम में आते हैं। संगठन का नाम है- ब्रेड फॉर पूअर- गरीब के लिए रोटी और संस्था का काम ईसाईयत का प्रचार करना। उक्त संगठन आजकल पूरा का पूरा ठगी में उतरा हुआ है। चर्च को मन्दिर, पादरी को संन्यासी, बाइबिल को वेद बताकर हिन्दू के घर में आसानी से घुस जाता है और बेचारे हिन्दू को पता ही नहीं चलता उसके घर से राम-कृष्ण-शिव कब विदा हो गये और उनके स्थान पर मरियम और ईसा आकर विराजते हैं। इसी तरह का संगठन एम.आर.ए. है। ईसाईयत के लिए काम करने वाली संस्थाओं में इस संस्था का भी नाम है। एम.आर.ए. संस्था ने ईसाईयत का काम किस प्रकार किया उसका उदाहरण है नागालैण्ड। क्या हिन्दू समाज इस बात से परिचित है कि आज नागालैण्ड में एक भी हिन्दू मन्दिर नहीं है। हम मुसलमानों को कहते हैं वे मन्दिर तोड़ते हैं, वे आक्रमण करते हैं। दोनों में अन्तर इतना ही है मुसलमान हिन्दू का मन्दिर बलपूर्वक तोड़ता है और हिन्दू को जबरदस्ती मुसलमान बनाता है। ईसाई हिन्दू से दोस्ती करता है और फिर उसी से मन्दिर तुड़वाता है। गत दिनों पायनीयर में एक अमेरिकन पादरी के अनुभव छपे थे- भारत में प्रचार करते हुए कैसा अनुभव हुआ? उसमें पादरी ने कहा था- मुझे सबसे सुखी दृश्य वह लगता था जब मैं किसी वनवासी परिवार को ईसाई बनाता था और वह परिवार अपने हाथों से मन्दिर तोड़कर उसके स्थान पर ईसा और मरियम की मूर्त्ति स्थापित करता था। आज नागालैण्ड में मन्दिर नहीं क्योंकि वहाँ हिन्दू नहीं बचा। आज नागालैण्ड में हिन्दू का प्रतिशत ७.७ है। इसका मुख्य कारण बलात् धर्म परिवर्तन तथा मारपीट कर हिन्दुओं को वहाँ से भगा दिया गया था। हिन्दुओं की संख्या शीघ्रता से कमी के पीछे एम.आर.ए. के शक्ति प्रयासों का प्रमुख योगदान है। क्या आप इतिहास के इस तथ्य से परिचित होना चाहेंगे कि संसार में जहाँ सबसे अधिक तेजी से ईसाईयत का प्रचार हुआ है, उसमें पूरे एशिया में फिलिपीन्स के बाद नागालैण्ड ऐसा दूसरा प्रदेश है जिसमें ईसाईयत का इतनी तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ है। यह राजमोहन गाँधी की संस्था एम.आर.ए. का प्रताप है। एम.आर.ए. संस्था ने असम के विभाजन के समय जो भूमिका निभाई है उसका लिखित प्रमाण विद्यमान है।

आज नागालैण्ड का इतिहास ईसाईयत से प्रारम्भ होता है और ईसाईयत पर समाप्त हो जाता है। नागालैण्ड ईसाई बनाने और उसे भारत से अलग देश बनाने का जो प्रयास चल रहा है उसमें इस संस्था की सक्रिय भूमिका है। नागा समस्या को बढ़ाने और उसमें आतंकवाद फैलाने का कार्य अमेरिका सी.आई.ए. के माध्यम से और चीन अपने जासूसों के माध्यम से करते हैं। सी.आई.ए. सहायता करती है चर्च की और एम.आर.ए. संस्था की। स्वतन्त्र नागालैण्ड संगठन के संस्थापक का नाम है अंगली जापू फीजो। यह संगठन ईसाई प्रचारकों द्वारा बनाया गया था। अमेरिका की नागालैण्ड रुचि वहाँ तेल की उपलब्धि है। जैसा खेल तेल के लिए अमेरिका संसार के अन्य देशों में करता है वही खेल वह नागालैण्ड में खेल रहा है। अब हम देख सकते हैं कि इस एम.आर.ए. संस्था से महात्मा गाँधी के पौत्र राजमोहन गाँधी किस प्रकार जुड़े हैं।

राजमोहन गाँधी १९५६ से इस संस्था से जुड़े और अपना अहिंसा के सिद्धान्त का अन्तराष्ट्रीय मञ्च बना कर उसके प्रचार-प्रसार में लगे हैं। जब यह संस्था चर्च से जुड़ी है तो कुछ लोगों ने राजमोहन गाँधी से प्रश्न किया- क्या आप ईसाई हो गये हैं? तब उन्होंने इसका सीधा उत्तर देना उचित नहीं समझा और कह दिया दूसरों के विश्वासों को जानना चाहिए, जिस संस्था ने नागालैण्ड में प्रतिदिन हिन्दुओं की हत्या की, हत्या की जा रही थी तब राजमोहन

गाँधी की संस्था वहाँ शान्ति की स्थापना बता रही थी। राजमोहन गाँधी ने भारतीय बालकों और साथियों के साथ विदेश में भगवान का सन्देश का अभिनय करके गरीबों के लिए विद्यालय बनाने के लिए धन माँगा परन्तु उसे देश के विभाजनकारी कार्यों में व्यय किया।

इस सारे विवरण को उनके पुराने साथी साई लाल जेदिया ने अपने साक्षात्कार में विस्तार से बताया है उन्होंने उनके पिता की लिखी पुस्तक 'वतन का दुश्मन' राजमोहन गाँधी को भी दिखाई है। इतना ही नहीं अमेरिकी गुप्तचर संस्था ने स्वीकार किया है कि उसने एम.आर.ए. से सहयोग जुटाया है। इस प्रकार अमेरिका सी.आई.ए. के माध्यम से सैकड़ों संगठन जो समाज सेवा के माध्यम से काम कर रही है, जो एम.आर.ए. जैसे हैं जिनमें राजमोहन गाँधी, केजरीवाल, योगेन्द्र यादव, प्रशान्त भूषण, सोनिया गाँधी आदि सैकड़ों हजारों नाम स्वयं सेवी संस्थाओं के माध्यम से जुड़े हैं वे जाने-अनजाने, लोभ या लालच से देशद्रोही गतिविधियों से जुड़े हैं और गत साठ वर्ष से भी अधिक समय से देश का अहित करने में लगे हुए हैं। यह इस चुनाव की सबसे बड़ी जीत है जो दिखावी अच्छे शब्दों के द्वारा देश का नाश करने में लगे हुए थे, उन्हें नरेन्द्र मोदी ने बड़े समर्थ व सशक्त तरीके से आइना दिखाने का काम किया।

राजमोहन गाँधी की एम.आर.ए. संस्था महाराष्ट्र के पंचगनी स्थान पर स्थापित है। इसके महत्त्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें प्रतिवर्ष सी.आई.ए. के सहयोग से भारत में राष्ट्र विरोधी गतिविधियाँ एवं आतंकवादी संगठन शिक्षा शिविर चलाये जाते हैं जिसमें प्रशासन के क्षेत्र में लोगों को प्रशिक्षण दिया जाता है। राजमोहन गाँधी की देशभक्ति पर तब प्रश्न चिह्न लग जाता है जब पाकिस्तानी एजेण्ट फई के अमेरिका गिरफ्तार किये जाने पर उसके छुड़ाने की अपील करने वालों की सूची में आपके हस्ताक्षर होते हैं। राजमोहन गाँधी ने मोदी विरोधी करने वाले लोगों का साथ दिया जिसमें तीस्ता सीतलवाड़, शबनम हाशमी, गौतम नवलखा, फादर सैड्रिक प्रकाश जिनकी स्वयं सेवी संस्था को अमेरिका से आर्थिक सहायता मिलती है। इनका कार्य केवल मोदी व हिन्दू संस्थाओं का विरोध करना है। इन्होंने पूरे विश्व में इस बात को फैलाने का यत्न किया कि भारत में हिन्दू लोग मुसलमान और ईसाईयों का खात्मा करने पर लगे हैं और मोदी उनका नेता है। अब आप सोच सकते हैं कि आज की लड़ाई किन विचारधाराओं के बीच है।

जब आज देश की जनता को मोदी यह बताने में सफल हुए हैं कि यह चुनावी लड़ाई निश्चित रूप से दो उन विचाराधाराओं की लड़ाई है जो एक को देशद्रोही की श्रेणी में रखती है और दूसरी देश को बचाने और अखण्ड बनाने की बात करती है। मोदी का यह कहना कि जब सारे देश के नागरिक स्वस्थ, सुखी, सफल हों तब यह प्रश्न पूछने का अवसर कैसे आता है कि मुसलमान या ईसाई सुखी नहीं होगा या यदि यह प्रश्न उचित हो सकता है तो कोई पत्रकार यह क्यों नहीं पूछता कि कांग्रेस के राज में कोई हिन्दू दुःखी तो नहीं है। यह प्रश्न उस विचारधारा से सम्बन्ध नहीं रखता क्योंकि वहाँ तो केवल यही पूछने की आज्ञा है कि इस देश में मुसलमान दुःखी तो नहीं, किसी ईसाई को पीड़ा तो नहीं है।

आज मोदी इस चुनावी समर को शिखर तक ले आये हैं वे इसे शिखर पर स्थापित करने में सफल होंगे। संस्कृत में ऐसे व्यक्ति के लिए एक उक्ति है जो दुःख और संकट नहीं झेलता उसको सफलता भी नहीं मिलती। संकट और दुःखी व्यक्ति यदि दुःख सह सके तो-

**न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति।**
**संशयं पुनरारुह्य यदि जीवति पश्यति।।**

**- धर्मवीर**

## आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छः-छः मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

# सुविचार और कुविचार

– स्वामी विष्वङ्

विचार मनुष्य को मनुष्य से दानव–राक्षस–दैत्य–पिशाच बना देते हैं और विचार ही मनुष्य को मनुष्य से देव–रक्षक–दिव्य–दयावान् बना देते हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन विचारों पर आश्रित है। विचारों को लोक में सोच भी कहते हैं। मनुष्य का सोच बदलता रहता है अर्थात् मनुष्य एक ही प्रकार का सोच नहीं रखता है। मनुष्य कभी अच्छा–श्रेष्ठ–उत्तम कहलाने वाले सोच को रखता है तो कभी बुरा–निकृष्ट–निम्न कहलाने वाले सोच को रखता है। जैसा सोच मनुष्य का होता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। यदि मनुष्य का सोच उत्तम है तो मनुष्य सुखी रहता है और यदि मनुष्य का सोच निम्न है, तो मनुष्य दु:खी रहता है। सुख व दु:ख का मूल कारण मनुष्य का सोच ही है। आम भाषा में जिसे सोच कहा जाता है, उसी को पठित वर्ग विचार कहता है। लौकिक दृष्टि में जिसे विचार कहा जाता है, उसी को आध्यात्मिक दृष्टि में 'वृत्ति' कहा जाता है। वृत्ति कहो या विचार कहो अथवा सोच कहो, एक ही बात है।

आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले प्रत्येक साधक को वृत्ति को जानना–समझना चाहिए। जिस वृत्ति से मनुष्य श्रेष्ठ बन जाता हो और जिस वृत्ति से मनुष्य निकृष्ट बन जाता हो, ऐसी वृत्ति को जान कर ही मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है। योग ने वृत्ति को अच्छी प्रकार समझाया है। योग के प्रवचन कर्ता महर्षि पतञ्जलि ने सूत्र रूप में वृत्ति को समझाया है और महर्षि वेद व्यास ने सूत्र रूप में समझाये हुए को व्याख्यान के रूप में विस्तार से समझाया है। महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि वृत्तियाँ बहुत हैं अर्थात् मनुष्य के द्वारा न गणना करने योग्य अनगिनत वृत्तियाँ हैं। चाहे जितनी भी हों परन्तु उन अनगिनत वृत्तियों को दो ही विभागों में रखा जा सकता है। एक विभाग वह है जो सुख देने वाली हैं और दूसरा विभाग वह है जो दु:ख देने वाली हैं। महर्षि ने अनगिनत वृत्तियों को दो विभागों में विभक्त–अलग किया है। चाहे हम उन को गिन पाये या न गिन पाये, परन्तु इतना अवश्य कर पायेंगे कि वह वृत्ति सुख देने वाली है या दु:ख देने वाली है, यह ज्ञान हो जायेगा।

आध्यात्मिक व्यक्ति को यह जानकारी कर लेनी चाहिए कि कौनसी वृत्ति सुख देने वाली होती है और कौनसी वृत्ति दु:ख देने वाली होती है। मनुष्य को यह जानकारी मिल जाये कि अमुक–अमुक वृत्ति सुख उत्पन्न करने वाली है और अमुक–अमुक वृत्ति दु:ख उत्पन्न करने वाली है। ऐसी स्थिति में मनुष्य सावधानी से चलने का प्रयास करता है। यदि मनुष्य जिस मार्ग में चल रहा हो और उस मार्ग की जानकारी न हो, तो अपने गन्तव्य स्थान में नहीं पहुँच पाता अथवा गन्तव्य स्थान में पहुँचने में विलम्ब हो जायेगा। विलम्ब होने के कारण प्रयोजन ही रह जायेगा अर्थात् सफलता नहीं मिल पायेगी। इसलिए आध्यात्मिक साधक को चाहिए कि जिस आध्यात्मिक मार्ग में चलना है, उसकी जानकारी अच्छी प्रकार कर लेनी चाहिए। जिससे गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर हताश–निराश न होना पड़े अर्थात् सफलता अवश्य मिले। इसलिए प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति को चाहिए कि वह वृत्ति के स्वरूप को जाने व समझे और तदनुरूप चलकर सफल हो जाये।

वृत्ति कहो या सोच कहो अथवा विचार कहो यदि वह विचार सुविचार हो, तो अति श्रेष्ठ माना जायेगा और यदि कुविचार हो, तो अति निकृष्ट माना जायेगा। क्योंकि मनुष्य सुविचारों के कारण ही सफल हुआ है, हो रहा है और होगा और यदि मनुष्य असफल हुआ है, हो रहा है या होगा, तो कुविचारों के कारण होगा। इसलिए मनुष्य जीवन की श्रेष्ठता और निकृष्टता विचारों पर निर्भर करता है और वह विचार सुविचार हो सकता है या कुविचार। किन विचारों को सुविचार और किन विचारों को कुविचार कहना चाहिए या कहते हैं? इसका समाधान महर्षि वेद व्यास ने इस प्रकार किया है कि जो विचार मनुष्य को सुख देने वाले हैं, उन्हें सुविचार कहा है और जो विचार दु:ख देने वाले हैं, उन्हें कुविचार कहा है। यहाँ पर सुविचार का अभिप्राय अक्लिष्ट से है अर्थात् क्लिष्ट–दु:ख देने वाले को कहते हैं और जो दु:ख नहीं देते हैं, उन्हें अक्लिष्ट कहते हैं। अक्लिष्ट यानि सुख देने वाले विचार, इन्हीं विचारों को सुविचार कहा जाता है। सुविचार का अर्थ स्पष्ट होने से कुविचार का अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाता है अर्थात् क्लिष्ट विचार यानि दु:ख देने वाले विचारों को कुविचार कहा जाता है।

सुविचार और कुविचार को लोक में सुदृष्टि और कुदृष्टि

शब्दों से भी कथन करते हैं। इन दोनों दृष्टियों में पहले कुदृष्टि-कुविचारों पर विचार करते हैं। कुविचारों को कुविचार क्यों कहते हैं? इसका समाधान महर्षि वेद व्यास इस रूप में करते हैं कि जो विचार क्लेशों से उत्पन्न होते हैं या जिन विचारों के पीछे क्लेश कारण हैं, उन विचारों को कुविचार या कुदृष्टि या क्लिष्ट वृत्ति कहते हैं। क्लेश उन्हें कहते हैं जिनको हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार कहते हैं। इन्हीं को योग की भाषा में अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश के रूप में कहा जाता है। कोई भी मनुष्य दु:खी नहीं होना चाहता है परन्तु मन में कुविचार चला रहे हैं और जब तक कुविचार चलते रहेंगे तब तक मनुष्य दु:ख से छुटकारा नहीं पा सकता। मनुष्य दु:ख से छुटकारा तो पाना चाहता है परन्तु कुविचारों से छुटकारा पाना नहीं चाहता है। यहाँ पर यह विचार करना चाहिए कि कुविचारों को मन में स्थान देते हुए दु:ख से छुटकारा पा सकते हैं या नहीं? कुविचारों के विषय में बिना विचार किये कैसे दु:ख छूटेगा?

मनुष्य जब विचारों (कुविचारों) पर विचार करता है, तो निश्चित रूप से समाधान मिलेगा तब मनुष्य उस समाधान को अपना कर दु:ख से छुटकारा पा सकता है। विचारों पर विचार करने से मनुष्य को यह समझ में आ जाता है कि यदि दु:ख से छुटकारा पाना है, तो कुविचार नहीं करना चाहिए अर्थात् मन में कुविचारों को उत्पन्न नहीं करना चाहिए। कुविचार मन में तब तक उत्पन्न होते रहेंगे जबतक मन में अविद्या आदि क्लेश बने रहेंगे। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि कुविचारों को हटाना है, तो क्लेश-अविद्या आदि को पहले हटाना चाहिए। विचारों पर विचार करने का यह परिणाम मिलता है कि यदि अविद्या आदि क्लेशों को हटाया जाये, तो कुविचार ही नहीं उत्पन्न होंगे। जब कुविचार ही उत्पन्न नहीं होंगे तब मनुष्य को दु:ख भी नहीं मिलेगा। यह विचार के रूप में और सिद्धान्त के रूप में अच्छा लगता है परन्तु मनुष्य प्राय: अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश रूपी क्लेशों को त्यागना नहीं चाहता है। मनुष्य को ऐसा लगता है कि बिना राग के बिना द्वेष-क्रोध के जीवन, जीवन नहीं लगता है अर्थात् राग किये बिना किसी अपने को अपना नहीं बना पायेंगे और बिना क्रोध-द्वेष के किसी को दण्ड नहीं दिया जा सकता या किसी दुष्ट व्यक्ति को हटाया व दूर नहीं किया जा सकता। ऐसा मान कर मनुष्य राग व द्वेष को आवश्यक मानता है, इसलिए राग-द्वेष को दूर नहीं करना चाहता है। लोक में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो यह कहते हैं कि राग-द्वेष को दूर करना चाहे, तो भी दूर नहीं कर सकते।

मनुष्य में यह स्वतन्त्रता है कि वह कुछ भी विचार कर सकता है परन्तु विचार के पीछे प्रमाण (मानक) होना चाहिए। बिना प्रमाण के कोई भी विचार उचित या अनुचित नहीं हो सकता। इसलिए मनुष्य को प्रमाण पूर्वक विचार करना होता है। बिना प्रमाण के कोई भी बुद्धिमान् स्वीकार नहीं करता क्योंकि जिस विचार को बुद्धिमान् बुद्धिपूर्वक स्वीकार नहीं करता, उस विचार को सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। राग और द्वेष आत्मा का स्वभाव नहीं हैं जो दूर नहीं किया जा सके। इसलिए राग और द्वेष उत्पन्न होते हैं और नष्ट भी होते हैं। इस कारण मनुष्य को प्रमाण पूर्वक विचार करना चाहिए कि राग-द्वेष के बिना भी किसी अपने को अपनाया जा सकता है और किसी को दण्ड दिया या दूर किया जा सकता है। इसलिए मनुष्य को प्रमाण पूर्वक विचार करते हुए अपने कुविचारों को हटाने के लिए राग-द्वेष को मन में स्थान नहीं देना चाहिए। यदि किसी कारण (पूर्व अभ्यास के कारण) से राग-द्वेष मन में स्थान लेने लगे, तो उन्हें रोकना चाहिए और साथ में यह भी विचार करना चाहिए कि राग-द्वेष हानिकारक हैं, ये आवश्यक नहीं हैं, इनके बिना भी सब व्यवहार उचित रूप में हो सकते हैं। ऐसा बार-बार विचार करने से हमारे विचारों में परिवर्तन होने लगेगा। एक ऐसा समय आयेगा कि हमारे विचार सुविचार बन जायेंगे और हम दु:ख देने वाले विचारों से बचे रहेंगे। कुदृष्टि-क्लिष्ट वृत्ति-कुविचारों का न होना बहुत बड़ी बात है।

मनुष्य को सदा यह प्रयास करना चाहिए कि उसके विचार राग, द्वेष, मोह आदि को उत्पन्न करने वाले न हों क्योंकि राग, द्वेष, मोह को उत्पन्न करने वाले विचार मन में वासनाओं को जन्म देते हैं। संस्कारों को वासनाएँ कहते हैं। यदि मन में वासनाएँ जन्म लेती हैं, तो मनुष्य और अधिक दु:खी होता है। वासनाएँ मनुष्य को बार-बार प्रेरित करती हैं, जिससे मनुष्य बार-बार उन कर्मों को करता है, जिन कर्मों को पाप कर्म कहा जाता है। इसलिए ऐसे विचार मनुष्य को उत्पन्न नहीं करने चाहिए, जिनसे वासनाएँ बने और वासनाओं से प्रेरित हो कर पाप कर्म करते जाये। यह एक विशेष चक्र है अर्थात् कुविचारों (क्लिष्ट वृत्तियों) से संस्कार बनते हैं और संस्कारों से फिर वृत्तियाँ बनती हैं फिर वृत्तियों से संस्कार, इस प्रकार यह शृंखला बिना रुके निरन्तर चलती रहती है। जब तक वृत्तियों से संस्कार और

संस्कारों से वृत्तियाँ बनती रहेंगी तब तक मनुष्य दु:खों से छुटकारा नहीं पा सकता। इसलिए इस शृंखला रूपी चक्र को रोकना है, रोकने पर ही मनुष्य दु:खों से छुटकारा पा सकेगा। कोई यह प्रश्न कर सकता है कि क्या सुविचारों से संस्कार नहीं बनते हैं? हाँ, सुविचारों से भी संस्कार बनते हैं परन्तु उन सुसंस्कारों से मनुष्य को दु:ख नहीं मिलता बल्कि सुख मिलता है। इसलिए सुविचारों से सुसंस्कार बनने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मनुष्य को कुविचारों एवं कुसंस्कारों से ही आपत्ति होनी चाहिए, जिससे मनुष्य कुविचार न कर सके और जिनके कारण कुसंस्कार मन में जन्म न ले सके। ऐसा करना ही बुद्धिमानी है।

कुविचार उत्पन्न नहीं होने चाहिए यह बात सिद्धान्त रूप से स्वीकार्य है परन्तु कुविचार मन में उत्पन्न ही न हो, इसका क्या उपाय हो सकता है? इसका समाधान महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेद व्यास ने योग के विधान के रूप में दिया। उस योग को अपनाने की आवश्यकता है। जिस दिन मनुष्य योग को सच्चे मन से स्वीकार कर लेता है, उसी दिन से कुविचार अपने आप बन्द होने लगते हैं। कुविचारों के बन्द होने में पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। यदि मनुष्य धैर्य से, एकाग्रता से, तप से, श्रद्धापूर्वक निरन्तर योग (यम, नियम आदि) का पान करता जाये, तो निश्चित रूप से कुविचार भी उसी मात्रा (जिस मात्रा में यम, नियम का पालन होता है) में कम होते-होते पूर्ण रूप से बन्द होने लग जायेंगे। यह मार्ग लम्बा अवश्य है परन्तु एक दिन अवश्य पूरा हो जायेगा। मनुष्य को चाहिए कि वह हताश व निराश न होता हुआ निरन्तर इसी योग मार्ग पर चलता रहे, बस इस मार्ग को छोड़े नहीं, सफलता अवश्यम्भावी है।

जिस प्रकार कुविचारों के कारण होते हैं, उसी प्रकार सुविचारों के भी कारण होते हैं। जैसे कुविचारों के कारण अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश हैं वैसे ही सुविचारों के कारण तत्त्वज्ञान है। महर्षि पतञ्जलि व महर्षि वेद व्यास तत्त्वज्ञान को विवेकख्याति शब्द से कथन करते हैं। विवेकख्याति का अभिप्राय है पृथकत्व-ज्ञान अर्थात् दो भिन्न-भिन्न पदार्थों को भिन्न-भिन्न पदार्थों के रूप में यथावत् जानना ही विवेकख्याति कहलाती है। जैसे शरीर और आत्मा ये दोनों भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं अर्थात् शरीर आत्मा नहीं है और आत्मा शरीर नहीं है दोनों अलग-अलग हैं। इसी को पृथकत्व ज्ञान कहते हैं परन्तु मनुष्य शरीर को आत्मा मानता है और शरीर के बिगड़ने पर या नष्ट होने पर दु:खी होता है। विवेकख्याति को मन में स्थान देने से मनुष्य दु:खी नहीं होता। इसलिए विवेकख्याति रूप तत्त्वज्ञान मनुष्य के विचारों को सुविचार बना देता है। सुविचारों के पीछे तत्त्वज्ञान कार्य करता है। तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को योग (यम, नियम आदि) को अपनाना चाहिए। जिससे मनुष्य तत्त्वज्ञानी बन सकता है।

मनुष्य के मन में एक समय एक ज्ञान रहता है यदि मन में अविद्या रूपी मिथ्या ज्ञान रहता है, तो तत्त्वज्ञान नहीं रह पाता और तत्त्वज्ञान रहता है, तो मिथ्या ज्ञान नहीं रह पाता। इसलिए जब तक मन में मिथ्या ज्ञान कार्य करता रहेगा तब तक मन में तत्त्वज्ञान नहीं आ पायेगा। मन में तत्त्वज्ञान को स्थान देना ही होगा क्योंकि मनुष्य दु:ख नहीं चाहता, दु:ख को हटाना चाहता है और मिथ्या ज्ञान के रहते दु:ख दूर नहीं होगा। इसलिए मनुष्य को न चाहते हुए भी तत्त्वज्ञान को स्थान देना ही होगा परन्तु तत्त्वज्ञान अपने आप मन में नहीं आ सकता। इसके लिए मनुष्य को योग को अपनाना होगा। योग ही मनुष्य के मन में तत्त्वज्ञान को स्थापित कर सकता है। यदि विचारों को सुविचार-अक्लिष्ट विचार या सुदृष्टि बनाना है, तो तत्त्वज्ञान-विवेकख्याति को मन में लाने का विचार करना ही होगा। मनुष्य को यह विचार करना ही चाहिए कि सुख और दु:ख का सम्बन्ध सुविचारों एवं कुविचारों से है। जितने अधिक सुविचार होंगे उतना ही अधिक सुखी और जितने अधिक कुविचार होंगे, तो उतना ही अधिक दु:खी होंगे। कोई यह विचार न करे कि सुख और दु:ख का सम्बन्ध बाहर के साधनों (पैसा, भूमि, भवन, सोना, चाँदी आदि) से है। हाँ, बाहर के साधन माध्यम अवश्य बन सकते हैं परन्तु मन के विचारों पर निर्भर करता है। यदि मन के विचार कुविचारों के रूप में विद्यमान हैं, तो बाहर के साधन कितने भी हों सुख नहीं मिल पायेगा और यदि मन के विचार सुविचार के रूप में विद्यमान हैं, तो बाहर के साधन न भी हों, तो भी मनुष्य को सुख अवश्य मिलेगा। मनुष्य को यह भी समझ लेना चाहिए कि सुख और दु:ख का सीधा सम्बन्ध मन से है और मन के विचारों से है।

महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि सम्पूर्ण कार्य जगत् (सृष्टि) के दो प्रयोजन हैं। एक मनुष्य को भोग कराना और दूसरा मनुष्य को अपवर्ग (मोक्ष) दिलाना। ये दोनों कार्य जगत् के हैं। जगत् में मनुष्य के शरीर के साथ-साथ महतत्त्व अर्थात् बुद्धि, अहंकार, मन

ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ भी हैं। ये सब आत्मा को भोग कराते हैं और अपवर्ग (मोक्ष) भी दिलाते हैं। ऐसा करना जगत् का अधिकार है अर्थात् जगत् का कर्त्तव्य है। इसे योग की भाषा में 'गुणाधिकार' कहते हैं। यद्यपि गुणों का अधिकार (कर्त्तव्य) दो प्रकार का है परन्तु मनुष्य एक अधिकार (भोग रूपी अधिकार) को ही बार-बार पूर्ण कर रहा है। दूसरे अधिकार (मोक्ष रूपी अधिकार) को पूर्ण नहीं कर पा रहा है। इसलिए महर्षियों ने कहा है भोग रूपी अधिकार को बनाया न रखने के लिए यत्न-पुरुषार्थ करना चाहिए। मन में ऐसे विचारों को स्थान देना चाहिए कि जिससे भोग रूपी गुणाधिकार हट जाये और मनुष्य अपवर्ग रूपी मोक्ष को प्राप्त हो सके। बिना अपवर्ग के आत्मा तृप्त नहीं हो सकता। आत्म-तृप्ति के लिए अपवर्ग का मिलना अति आवश्यक है। अपवर्ग को दिलाने वाले विचारों को सुविचार कहते हैं। ऐसे सुविचार विवेकख्याति रूपी तत्त्व ज्ञान से ही सम्भव है।

मनुष्य को यह विचार कभी नहीं करना चाहिए कि मन में चाहे सुविचार उत्पन्न हों या कुविचार उत्पन्न हों, इससे क्या अन्तर आयेगा? यह तो विचार मात्र हैं इसके विषय में अधिक सोचना नहीं चाहिए। मनुष्य को ऐसी भूल कभी नहीं करनी चाहिए क्योंकि विचारों से ही जीवन बनता है और विचारों से ही जीवन नष्ट होता है। कैसे? विचार कर्मों को जन्म देते हैं। यदि हम कर्म कर रहे हैं, तो विचारों के कारण कर रहे हैं। यदि यह सोच कर चले कि मन में कैसे (सुविचार या कुविचार) भी विचार चले, इससे क्या अन्तर पड़ेगा। ऐसा मान कर चलने से कर्मों में बहुत बड़ा अन्तर उत्पन्न हो जायेगा। हम सब जानते हैं कि मनुष्य को उत्तम कर्म करने चाहिए। उत्तम कर्म अपने आप नहीं होते हैं। उत्तम कर्म उत्तम विचारों से उत्पन्न होते हैं अर्थात् सुविचारों के कारण ही मनुष्य उत्तम कर्म कर पाता है। यदि मन में सुविचार न हों, तो उत्तम कर्म कैसे कर पायेंगे? उत्तम कर्मों के बिना भोग रूपी गुणों के अधिकार को कैसे रोक पायेंगे? इसलिए उत्तम कर्मों को करने के लिए सुविचारों का होना आवश्यक है। इस कारण मन में कोई भी विचार आ जाये अर्थात् कुविचार आ जाये, तो क्या अन्तर पड़ेगा, इस विचार रूपी सोच को मन में कभी स्थान नहीं देना चाहिए।

सुविचार में और कुविचार में इतनी शक्ति है कि विचार चाहे मनुष्य को दरिद्र से दरिद्र और धनवान् से धनवान् बना सकते हैं। यहाँ दरिद्रता का अभिप्राय दु:ख से है और धनवान् का अभिप्राय सुख से है। मनुष्य एक विचार से इतना दु:खी हो सकता है, जिसकी कल्पना करना कठिन हो जायेगा और एक विचार से इतना सुखी हो सकता है, जिसका वर्णन करना कठिन हो जायेगा। विचार सूत्र का कार्य करता है या विचार एक मन्त्र का कार्य करता है। एक ही विचार मनुष्य जीवन का कायाकल्प कर सकता है, क्योंकि विचार में सर्वाधिक शक्ति है। इसलिए विचार का मूल्यांकन करने में यह भूल नहीं करना चाहिए कि विचार ही तो हैं, इससे क्या अन्तर आ जायेगा? ऐसा कभी स्वप्न में भी नहीं सोचना चाहिए। इतिहास के पन्ने पलट कर देखें, तो जानकारी होगी कि जितने भी ऋषि, महर्षि, मुनि-महामुनि, महापुरुष, तपस्वी-योगी, समाजसेवी आदि हुए हैं। इन सबके पीछे एक मात्र मूल कारण विचार ही हैं और आज वर्तमान में भी कोई व्यक्ति विशेष है, तो भी उसके पीछे विचार ही कारण हैं और भविष्य में कोई विशेष बनेगा तो भी विचार ही कारण बनेंगे। हमारे समस्त कर्मों का आदि स्रोत विचार हैं। मनुष्य के विचार मन में उत्पन्न होते हैं। वे विचार सर्व साधारण नहीं होते हैं। हाँ, यदि सर्वसाधारण होते हैं, तो वे कर्म हैं। जिनसे मनुष्य का व्यक्तित्त्व जाना जाता है कि वह सर्वश्रेष्ठ है या सर्व निकृष्ट है। कर्म मनुष्य को पहचान देते हैं परन्तु कर्म तभी पहचान दें सकते हैं जब कर्मों के पीछे विचार हों। इसलिए विचारों को हल्के में कभी नहीं लेना चाहिए। विचारों को समझने के लिए विचार करना होगा और विचार करते समय प्रमाणों को साथ लेना होगा। प्रमाणों को साथ लेकर चलते हुए स्वयं (आत्मा) को पवित्र-शुद्ध रखते हुए निष्पक्ष विचार करना चाहिए अन्यथा प्रमाणों का दुरुपयोग भी हो सकता है। निष्पक्ष होकर शुद्धता से ही प्रमाणों का सदुपयोग हो पाता है।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

---

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११**

इस प्रत्यक्ष चराचर जगत् के चौंतीस (३४) तत्त्व कारण हैं उनके गुण और दोषों को जो जानते हैं उन्हीं को सुख मिलता है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६१**

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

**पिछले अंक का शेष भाग....**

**श्री दयालमुनि जी की एक देन:**- श्रीमान् दयालमुनि जी टंकारा ने आर्यसमाज के गुजराती साहित्य को समृद्ध बनाने का जो कार्य किया है व कर रहे हैं उस की जितनी भी प्रशंसा की जाये वह थोड़ी है। महर्षि के आरम्भिक जीवन तथा ऋषि के वेदभाष्य आदि के गुजराती अनुवाद के लिए आपकी साधना भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। आपकी एक विशेष देन की ओर आर्यजगत् का ध्यान खींचना हम सबका आवश्यक कर्त्तव्य बन जाता है। श्रद्धेय लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में भी इस पर खुलकर लिखा गया है।

महर्षि के परिवार के नामों तथा शिवरात्रि की घटना किस मन्दिर में घटी, इस विषय में कुछ लेखकों ने भ्रामक बातें लिख कर बुद्धि भेद पैदा कर दिया। कुछ और महानुभाव आगे निकल आये जिन्होंने अपनी रिसर्च को दिखाने के लिए शिवरात्रि की घटना पर देवेन्द्र बाबू जी के मत की आड़ लेकर आर्य जनता को उलझाने का बार-बार प्रयास किया। एक बार मोगा के सच्चिदानन्द जी ने शिवरात्रि पर जन साधारण में यही प्रश्न उठा कर मठ में कथा का कार्यक्रम नीरस बना दिया। हमने तो आपत्ति की ही, श्री स्वामी सर्वानन्द जी को भी उनके विचार हानिकारक लगे।

कैथल के लाला गिरधारीलाल जी ने टंकारा ट्रस्ट को बहुत दान दिया। आपने भी यह विवाद खड़ा करने वाला लेख लिख डाला कि यह घटना टंकारा में नहीं घटी थी तब मान्य ओंकारनाथ जी का पत्र पाकर हमने लाला जी को उत्तर देकर चुप करवाया।

जब दयाल मुनि जी की खोज हमारे सामने आई तो हमारा मन गद्गद् हो गया। आर्य विद्वानों को दयालमुनि जी की एतद्विषयक खोज का लाभ जन-जन को पहुँचाना चाहिये। उनके कथन का सार इस प्रकार से है:-

१. शिवरात्रि की घटना के समय पुजारी तथा अन्य लोग बाहर निकल कर सो गये। पूना प्रवचन में ऋषि जी ने ऐसा बताया था परन्तु देवेन्द्र बाबू जी के बताये गये जड़ेश्वर के विशाल गर्भ गृह से बाहर आने की आवश्यकता ही नहीं थी।

२. जड़ेश्वर के मन्दिर का फर्श पक्का है। वहाँ चूहे का बिल हो नहीं सकता।

३. जड़ेश्वर का मन्दिर ५० वर्ष पूर्व भी जंगल से घिरा था जहाँ हिंसक पशु थे वहाँ रात्रि समय आना-जाना सम्भव ही नहीं था।

४. टंकारा का मन्दिर नगर से बाहर है। जड़ेश्वर का मन्दिर ८-९ किलोमीटर की दूरी पर है उसे नगर से बाहर कौन मानेगा?

देवेन्द्र बाबू के कथन में कुछ परस्पर विरोध भी है। दयालमुनि जी का निष्कर्ष निर्णायक है। आपने भ्रम भञ्जन करके भारी उपकार किया है।

**स्वामी वेदानन्द जी की वेद सेवा:**- आज से ५० वर्ष पूर्व स्वामी वेदानन्द जी के वेद व्याख्या ग्रन्थों तथा ऋषि के वेद भाष्य से पत्रों में वेदामृत छपा करता था। वेद प्रवचन स्वाध्याय सन्दोह आदि से ही दिये जाते थे। जब उपाध्याय जी का वेद प्रवचन तथा श्रुति सौरभ का प्रचार-प्रसार हुआ तो स्वाध्याय सन्दोह जैसे अद्वितीय ग्रन्थ को सीमित स्वाध्याय करके रैडी मेड लैक्चर देने वालों ने पीछे धक्केल दिया। यह बहुत बड़ी क्षति हुई है। स्वाध्याय सन्दोह तो वेद का ज्ञानकोश कहा जा सकता है। अमर स्वामी जी इस ग्रन्थ रत्न की रचना की जो कहानी सुनाया करते थे उसे कभी फिर दिया जावेगा।

आज परोपकारी के माध्यम से माननीय डॉ. वेदपाल जी से यह विनती करनी है कि वह स्वामी वेदानन्द जी के सब वेद व्याख्या ग्रन्थों पर एक पठनीय पुस्तक लिखें। वेदपाल जी ही वेदानन्द जी के साहित्य पर कार्य करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अधिकारी विद्वान् हैं। क्या आप यह गुहार सुनेंगे? यह करणीय कार्य और कौन करेगा? नये विद्वानों में से परोपकारिणी सभा डॉ. रमेशदत्त जी को यह कार्य सौंप सकती है परन्तु मार्गदर्शन डॉ. वेदपाल जी का ही हो।

**इन बिन्दुओं तथा तथ्यों को उठाओ:**- दूरदर्शी लोग तथा जीवित संगठन अपनी विचारधारा तथा संगठन को फैलान के लिए कुछ मूलभूत विचारों, स्वर्णिम इतिहास, विशेष बिन्दुओं तथा तथ्यों को बहुत उठाते और महत्व देते रहते हैं । आज आर्यसमाज अपनी यह विशेषता खो चुका है। हमारे व्याख्याता कुछ शब्दों की तुक मिलाकर अपने व्याख्यानों को रोचक बनाने में लगे रहते हैं। तड़प-झड़प में क्रमश: कुछ बिन्दुओं को उठाने के लिए अगले अंकों में भी दिया जावेगा:-

१. अन्य सुधारकों विद्वानों के सदृश महर्षि दयानन्द जी ने अंग्रेजों की अथवा किसी राजा महाराजा की नौकरी चाकरी कभी नहीं की। राजा राममोहनराय, सर सैयद, मिर्जा गुलाम अहमद, पं. श्रद्धाराम आदि ने गोरों की नौकरी की।

२. ऋषि ने किसी महिला के संग ग्रुप फोटो या कभी चित्र नहीं खिंचवाया। एकान्त में कभी अकेली महिला से वार्ता नहीं की।

३. सन् १८५७ के विप्लव को गदर न कहने मानने वाले प्रथम नेता ऋषि ही थे। उस समय गोरों द्वारा किये गये नर संहार की निन्दा में बोलने वाले प्रथम विचारक ऋषि जी ही थे।

४. ऋषि के घोर विरोधी और निन्दक भी ऋषि के व्यक्तित्त्व तथा चरित्र का बखान करते हुए संसार से गये यथा पं. श्रद्धाराम,पं. श्री गोपाल जी शास्त्री मेरठ, पं.गोपाल शास्त्री जम्मू, लाला जीयालाल जैनी आदि।

५. परकीय मतावलम्बियों से इतिहास में पहली बार शास्त्रार्थ करने वाला महाप्रतापी मुनि ऋषि दयानन्द ही थे। चाँदापुर में मौलवी व पादरी मैदान छोड़कर निकल गये। मुम्बई में डींग मारने वाला गोरा पादरी कुक सात समुद्र पार भाग गया। यह इतिहास की पहली घटना है।

६. आर्य जाति का सबसे पहला ब्राह्मणेतर शास्त्रार्थ महारथी राव बहादुरसिंह मसूदा राजपूत कुलोत्पन्न था। ऋषि की परम्परा में छहों दर्शन का भाष्य करने वाला पहला ब्राह्मणेतर कुल में जन्मा मूर्धन्य दार्शनिक आचार्य उदयवीर भी राजपूत कुल में जन्मा था।

७. उन्नीसवीं शताब्दी के सुधारकों, महात्माओं व संगठनों में बलिदान की परम्परा चलाने का गौरव केवल ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज को ही प्राप्त है। रामकृष्ण मिशन, ब्राह्मसमाज, स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहनराय, भण्डारकर अथवा श्रद्धाराम की परम्परा में किसी ने धर्म व जाति रक्षा तथा दलितोद्धार के लिए प्राण नहीं दिये। किसी ने गोली, छुरे का स्वाद नहीं चखा। किसी ने विष नहीं पिया। किसी की कारागार में मृत्यु नहीं हुई। किसी को फांसी पर नहीं चढ़ाया गया। किसी को जीवित भी नहीं जलाया गया। प्यारे ऋषि के लाडले, श्याम भाई तथा पं. नरेन्द्र के रणबांकुरों यथा वीरवर भीमराव पटेल, वीर काशीनाथ, वीराङ्गना माता गोदावरी देवी, उसका पति कृष्णराव तथा गोविन्दराव निजाम उस्मान के राज्य में देशहित जीवित जलाये गये। शेष फिर

इस सम्बन्ध में सब तथ्यपूर्ण प्रामाणिक जानकारी लक्ष्मण जी द्वारा लिखित महर्षि के सबसे बड़ें जीवन चरित्र में मिलेगी।

**दंगों पर राजनीतिः**- देश में दंगों पर सस्ती तथा लचर राजनीति करने का फैशन सा हो गया है। गम्भीरता से दंगों के उन्मूलन का दृढ़ निश्चय होना चाहिये। यह जानना चाहिये कि गुजरात में दंगे हुए क्यों? गोधरा में निर्दोष जलाये गये, वह क्या पाप नहीं था? मोपलों ने मालाबार में हिन्दुओं का नर संहार किया। बलात्कार की घटनायें भी हुई। पीड़ितों की सहायता के लिए आसपास या दूर से एक भी कांग्रेसी नेता न पहुँचा। वहाँ दंगों का कारण कांग्रेस का खिलाफत विदेशी समस्या आन्दोलन था। कश्मीर में शेख अब्दुल्ला की पार्टी ने सन् १९३२ में हिन्दू सिखों का नरसंहार कराया उसकी चर्चा कभी नहीं होती। पंजाब में आतंकवाद के कारण सहस्त्रों निरपराधी हिन्दू और सिख मारे गये। यह सारा पाप कांग्रेस की नीति से हुआ। पीड़ितों की सहायता सरकार ने क्या की? मारे गये लोगों की गुजरात दंगों की रट लगाने वालों ने बात तक नहीं की। कांग्रेस के कैरोंशाही राज में फीरोजपुर जेल में निहत्थे बन्दियों को हत्यारों से लहूलुहान करवाया गया। सुमेरसिंह को प्राण देने पड़े। उनकी चर्चा क्यों नहीं।

हैदराबाद के निजाम के राज में देश की अखण्डता के लिए वीर भीमराव पटेल आदि जीवित जलाये गये। निजाम ने भारत से युद्ध लड़ा उसे राजप्रमुख बनाया गया । क्या यही देशभक्ति व धर्मनिरपेक्षता थी । स्वामी श्रद्धानन्द जी के हत्यारे अब्दुलरशीद को तो भाई माना गया। यह कहाँ की अहिंसा नीति थी। एक के बाद दूसरा पाप होता चला आ रहा है। क्यों?

**- वेद सदन, अबोहर-१५२११६ ( पंजाब )**

## पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

## दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

### प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से

पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

**: मार्ग :**

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से ( वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा ) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

**-संयोजक**

## परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

**१.** २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

**२.** १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

**३.** १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर ( द्वितीय स्तर ),**

सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

**विशेष**- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

## ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा–ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान–प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम–स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान–प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान–प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक–व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

**सम्पर्क–संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष–०१४५–२४६०१६४, ईमेल**–psabhaa@gmail.com

## अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम – परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक खाता संख्या–091104000057530 बैंक का नाम–आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC – IBKL0000091**

**२. बैंक खाता संख्या –10158172715 बैंक का नाम – भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC – SBIN0007959**

।। ओ३म् ।।

# अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

# लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

# महर्षि दयानन्द - एक परिचय

**- सुश्री गीता धनवानी**

वे सूर्य के समान प्रकाश पुन्ज बनकर इस युग में अवतरित हुए। वे परहित जीये, मानवता को सन्मार्ग पर लाने के लिए उन्होंने एक नया दृष्टिकोण दिया। चन्द्रमा के प्रकाश की तरह रात्रि का अन्धकार दूर किया। उस घोर अन्धकार के युग में समाज में व्याप्त कुरीतियों का निराकरण अपने उपदेशों द्वारा व ग्रन्थों द्वारा किया। सत्य के अर्थ को प्रकाशित करने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमूल्य साहित्य का सृजन किया। स्वामी दयानन्द परोपकार की एक ऐसी मिसाल थे कि आज भी उनकी देह न होने के उपरान्त भी जनकल्याण, समाज कल्याण, नारी सम्मान के प्रयत्न हमारे बीच में विद्यमान हैं।

उस तेजस्वी पुरुष ने समाज को बदलने का अथक प्रयास किया। नारी को उन्होंने विशेष दर्जा देते हुए उनके अधिकारों की रक्षा की। नारी शिक्षा व विधवा विवाह का प्रचलन किया। आर्यसमाज के रूप में क्रान्तिकारी संस्था का निर्माण किया।

उनके महान् कार्यों को देखें तो हम उस ऋण को उतारने में आज तक समर्थ नहीं हुए। हमें उनके विचारों को कार्यरूप में परिणीत करते हुए, उनके सपनों को साकार करना होगा। उनसे प्रेरणा लेते हुए आज के युग में जो चुनौतियाँ हैं उनको स्वीकार कर हमें उनके बताये मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। दु:ख, कष्टों से नहीं घबराना चाहिए। हमें रूढ़ियों को तोड़कर नवसमाज का निर्माण करना चाहिए। इसके लिए सभी को संगठित होकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहिए। मानव अधिकारों की रक्षा करते हुए हमें ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जिसमें शान्ति, प्रेम व भाईचारे का समावेश हो।

अन्त में मैं यही कहूँगी-

**लफ्ज बयां नहीं कर सकते, उनके उपकार शब्दों में आ नहीं सकते।**
**यादों में अमिट हैं वे अब तक, उनके कदमों के निशां मिटा नहीं सकते।।**

**- डिग्गी बाजार, अजमेर**

---

# आस्था भजन ( चैनल ) पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

# ब्रह्माण्ड की यात्रा आधुनिक विज्ञान के संदर्भ से

- माधव. के. देशपाण्डे

कभी न कभी, कहीं न कहीं हमारे मन में निश्चित यह प्रश्न उपस्थित होता ही है कि यह सृष्टि बनाई है तो किसने? क्यों? यह कितनी बड़ी है? क्या हम जितना देख पा रहे हैं उतनी है अथवा उसके परे भी? यदि है तो और कितनी? यदि यह नियम से चल रही है, तो इसका नियन्ता कौन होगा? इतनी विशाल सृष्टि का नियन्ता, कर्ता कितना महान् होगा? इन सारे प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का अनेकों ने प्रयत्न किया। प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों ने भी और अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने भी। आज तक उन्होंने क्या जाना? इन वैज्ञानिकों ने इस जगत् में, ब्रह्माण्ड में जो भी शोध प्रस्तावित किये, इनके कुछ-कुछ बिन्दुओं पर हम विचार करेंगे। साथ-साथ इस मान्यताओं के वैदिक सन्दर्भ भी देखेंगे।

**यह ब्रह्माण्ड क्या है?:**- जो भी सृष्टि हम देखते हैं और जो भी उसके परे है इसमें जितने भी पदार्थ हैं, आप और मैं से लेकर अति दूर तक रहने वाले, दिखने वाले चमकते तारों सहित जो भी अस्तित्त्व में हैं और जो कुछ भी इस विशाल क्षेत्र में है, वह सब इस ब्रह्माण्ड में है। इस क्षेत्र का विस्तार हमारे कल्पना शक्ति से भी परे है, उसे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड संज्ञा से पुकारते हैं। आकाश में, रात्री में हम देखते हैं कि असंख्य तारों का समूह एक साथ है, इसे आकाशगंगा और दूधगंगा कहते हैं। यह हमसे कितने दूरी पर है? वैज्ञानिकों ने इसे लगभग नापा है। अति दूर होने से, वैज्ञानिकों ने प्रकाश की गति का एक 'एकक' यूनिट बनाया है। वह है एक प्रकाश वर्ष। अर्थात् १ वर्ष के काल में प्रकाश कितना दूर जाता है? प्रकाश की गति एक सैकण्ड में लगभग ३००००० किमी. है। तो एक वर्ष में वह ९५ दश खर्वम् (९ से आगे ९९ शून्य =९ दश खर्व) किमी. जाता है। इस आकाशगंगा से निकला प्रकाश किरण पृथ्वी पर हमारे पास आता है तो उसे लगभग ९० करोड़ प्रकाश वर्ष लगते हैं। क्या हम इतने अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड की कल्पना कर सकते हैं?

**क्या हम भूतकाल में झांक सकते हैं? :**- जब हम रात्री में इस आकाशगंगा को देखते हैं, उसमे जो असंख्य तारे हैं, वहाँ से निकली किरण देखते हैं आज, वह किरण उस तारे से कब निकली है? हमारी सूर्य माला का सबसे करीब वाला तारा प्रौक्झीमा सेंच्यूरी हमसे ४ प्रकाशवर्ष की दूरी पर है। इसका अर्थ यह है कि हम उस तारे की उस किरण को देख रहे हैं (आज) वह उस तारे से ४ वर्ष पूर्व निकली है?

**जगत् का निर्माण:**- इतने विशाल, अनन्त ब्रह्माण्ड की निर्माण कब हुआ? क्या वैदिक ज्ञान हमें यह बता सकता है कि इतना सारा ब्रह्माण्ड एक ही समय निर्माण हुआ अथवा केवल हमारी सूर्य माला, पृथ्वी और हमारे सहित अलग से निर्माण हुई? जो हम सृष्टि कि गिनती करते हैं १ अरब ९६ करोड़ इति वह इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की है अथवा हमारे सूर्यमाला तक ही सीमित है?

इस विषय में पाश्चात्य वैज्ञानिकों की खोज जारी है। आज जो सिद्धान्त मान्य है वह है Big Bang Theory कृपया इस सिद्धान्तों के शब्दों पर विचार करें। लगभग १३० करोड़ वर्ष पूर्व अवकाश में एक स्फोट हुआ, जब अवकाश और काल का निर्माण हुआ और अणु का विस्तार प्रारम्भ हुआ। इस स्फोट के पूर्व जो भी जगत् में था, वह सूक्ष्म अवस्था में था, जो अवस्था एक अणु के न्युक्लीयस से भी सूक्ष्म थी। यह सिद्धान्त एडवीन हबल महोदय ने सन १९२० में प्रथम प्रस्तुत किया। इसका अर्थ इससे पूर्व अणु-मैटर-प्रकृति-विद्यमान था, अवकाश और काल समय विद्यमान था। इसके उपरान्त अणु का, मैटर का विस्तार प्रारम्भ हुआ। अब इस विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में लिखा है (स. १८७५) ''वैसे जगत् की उत्पत्ति से पूर्व परमेश्वर, प्रकृति, काल और आकाश तथा जीवों के अनादि होने से इस जगत् की उत्पत्ति होती है। यदि इनमें से एक भी न हो तो जगत् भी न हो।'' अन्य स्थान पर इसी समुल्लास में लिखा है ''जगत् के तीन कारण होते हैं, निमित्त, उपादान और साधारण। वैज्ञानिक निमित्त को नहीं मानते। उपादान और साधारण कारण (साधन) को यह सिद्धान्त स्वीकार करता है। जैसा महर्षि दयानन्द लिखते हैं उपादान-प्रकृति-परमाणु-जिसमें संसार बनने की सामग्री है और जिन-जिन साधनों से अर्थात् ज्ञान, दर्शन, बल, औजार आदि साधन तथा दिशा, काल और आकाश ये सब साधारण कारण है।''

वैज्ञानिकों की आज यह मान्यता है कि ब्रह्माण्ड में

चार शक्तियाँ काम करती हैं- (१)गुरुत्वाकर्षण (२)चुम्बकीय विद्युत् (३)अणुशक्ति और (४) कमजोर अणुशक्ति।

गुरुत्वाकर्षण शक्ति जो ब्रह्माण्ड की वस्तुओं को नियमितता में बान्धती है। जो एकत्रित कार्य करती है। दूसरी चुम्बकीय एवं विद्युत् शक्ति यह प्रकाश एवं विद्युत् शक्ति निर्माण करती है। तीसरी तीव्र अणु शक्ति मूलद्रव्यों को एकत्रित बांधने में काम कर रही है और (४)चौथी शक्ति कमजोर अणु शक्ति यह अणु के विघटन में काम कर रही है। स्थिति, उत्पत्ति और लय।

**अवकाश अथवा स्पेसः**- स्पेस जिसे अन्तराल कहते हैं, यह हमें यहाँ से तो अत्यन्त शान्त नजर आता है। किन्तु है महाभयंकर। यदि हम अवकाश में प्रवेश करे और विशेष सुरक्षा के कपड़े ना पहने तो क्या होगा? आपने नील आर्मस्ट्रांग, यूरी गागरीन को देखा होगा। यदि हम यह विशेष अवकाश सूट नहीं पहना और अन्तराल में आये तो क्या होगा? प्रथम तो प्राण वायु के बिना मृत्यु निश्चित है। परन्तु इससे भी पूर्व वातावरण का दाब न होने से, हमारे धमनियों का रक्त दबाव उबालने के समान बढ़ेगा सूर्य की अल्ट्रा व्हायलेट किरणें हमें क्षणभर में जलाकर राख कर देगी। हमारी पृथ्वी पर जो वातावरण है लगभग २०० से १००० किमी. तक, उसके कारण हम पृथ्वी पर सुरक्षित हैं और गुरुत्व आकर्षण जितना पृथ्वी पर है उतना अन्तराल में नहीं। यह गुरुत्व शक्ति हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हमें प्रभावित करती हैं। अन्तराल में लगभग ९०० से १००० किमी. की दूरी के बाद यह शक्ति नहीं के बराबर होती है और यहीं से अन्तराल यान पृथ्वी के साथ-साथ घूमते हैं। यह शक्ति शून्य होने से यहाँ भार रहित अवस्था में हम जाते हैं। यह एक विचित्र अनुभव वाली स्थिति है। इसके लिए अवकाश यात्री को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। अवकाश में किसी भी वस्तु को घूमने के लिए उसे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण शक्ति से, अधिक शक्ति से घूमना पडेगा। यह है साधारणतया २०० किमी. ऊपर और ७.८ किमी. प्रति सैकण्ड गति।

**हमारी सूर्यमाला और ब्रह्माण्ड में उसका स्थानः**-

इस विराट् ब्रह्माण्ड में हमारी सूर्यमाला एवं पृथ्वी का स्थान बताना अत्यन्त कठिन है। फिर भी अवकाश वैज्ञानिक दूसरे ग्रह तारों की स्थिति के सन्दर्भ में इसका स्थान बताते हैं। हमारी पृथ्वी साधारण तथा २०० दशकोटि सितारों की दूध गंगा में मिल्की वे, जो १ लक्ष प्रकाश वर्ष के क्षेत्र में फैली है। हमारी सूर्यमाला इसमें कहीं पर है। हमारी सूर्यमाला में सूर्य यह प्रखर तारा मुख्य और केन्द्र भी है। इसके आकर्षण शक्ति में जो भी है वह इसी की परिधि में घूमता है। जो इस आकर्षण शक्ति से परे है वह बाहर अवकाश में फैल जाता है। इसमें आज तक ज्ञात ८ ग्रह हैं और अन्य अनेक वस्तुएँ, अवकाश यान, धूमकेतू इत्यादि असंख्य हैं। इसमें सबसे दूर नेप्चून रहता है किन्तु यहीं इसका अन्त नहीं।

नेप्चून सूर्य से ५९०० दश लक्ष किमी की दूरी पर है जबकि सबसे पास बुध है वह ५७ दशलक्ष किमी की दूरी पर है। हमारी पृथ्वी १५० दश लक्ष किमी की दूरी पर है।

हमारी पृथ्वी अपनी कक्ष पर १६०९ किमी. प्रति घन्टे की गति से घूम रही है। इसका वातावरण लगभग १००० किमी. उँचाई तक है। यह वातावरण ना हो तो किसी जीव की उत्पत्ति यहाँ पर असम्भव है और इस विशाल ब्रह्माण्ड में जहाँ भी यह परिस्थिति बनी है अथवा बनेगी वहाँ जीव की उत्पत्ति होगी।

पृथ्वी के वातावरण को वैज्ञानिकों ने पाँच भागों में बाँटा है- (१) भूमि से २० किमी. पर्यन्त का भाग, जिसमें ओजोन आवरण है।

(२) भूमि से २० किमी. से ५० किमी. पर्यन्त यहाँ तापमान -६०° से. आसपास होगा इसी क्षेत्र में जेट प्लेन उड़ते हैं। आपने प्लेन में सुना होगा कि आपको बाहर के तापमान की जानकारी बार-बार दी जाती है।

(३) ५० किमी. से १०० किमी पर्यन्त। यहाँ साधारणतया तापमान -१०० के आस-पास होता है।

(४) भूमि से १०० से ७०० किमी. पर्यन्त। यह सबसे अधिक गरम भाग है। साधारण तापमान १०० के आसपास है।

(५) भूमि से ७०० से ९०० किमी. पर्यन्त। यहाँ से अवकाश प्रारम्भ होता है।

**चन्द्रमा का अद्भुत चमत्कार :**- चन्द्रमा इस सूर्यमाला का एक अद्भुत उपग्रह है। शीतलता और सौन्दर्यता के लिए अधिक प्रसिद्ध है। दृश्य जगत् में अधिक गति से घूमने वाला प्रतीत होता है। इसलिए इसे मन की उपमा भी दी जाती है।

यह हमारी भूमि के सबसे पास वाला उपग्रह, ग्रह है। वह आयताकृत वर्तुक के परिधि में पृथ्वी के चक्कर काटता है अर्थात् उसका पृथ्वी से दूरी कम ज्यादा होती रहती है।

यह अधिकतम ४,०५,५०० किमी दूर और कम से कम ३,६३,३०० किमी दूर है। यहाँ का तापमान अधिक से अधिक १०० से लेकर, कम से कम -१७३ रात्री में रहता है। सूर्य से पृथ्वी और चन्द्रमा की दूरी साधारण या समान है। इसलिए सूर्य से दोनों को समान तापमान (उष्णता) प्राप्त है। किन्तु चन्द्र पर वातावरण ना होने से अधिकतम तापमान १०० और रात्री में -१७३ ठण्डा होता है क्योंकि वातावरण नहीं और बादल भी नहीं, जो तापमान को पृथ्वी पर ठण्डा होने नहीं देते।

यदि आप चन्द्रमा पर खडे हैं, तो आपको ऊपर का आकाश सर्वदा काला दिखेगा, रात्रि हो या दिन। कारण वातावरण में वायु न होने से। यहाँ वातावरण में स्थित विभिन्न वायु नायट्रोजन, ऑक्सीजन के कणों से सूर्य किरणें फैलती हैं, परावर्तित होती हैं, जिससे आकाश में प्रमुखता से नील प्रकाश फैलता है। अन्य रंग नहीं। इसलिए पृथ्वी पर आकाश नीला है और चन्द्रमा पर काला। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास में लिखते हैं ''वे पृथ्वी से उड़कर उभर गए हुए जल, पृथ्वी और अग्नि के त्रस रेणु है (H2O) जहाँ से वर्षा होती है। इसलिए वह नील सा दिखता है।''

**सापेक्षता का सिद्धान्तः**- अलबर्ट आइन्स्टाईन महोदय ने अपना प्रसिद्ध सिद्धान्त सन् १९१० में प्रस्तुत किया। जो सृष्टि के पदार्थ, काल, आकाश, प्रकाश की गति, पदार्थों का भार और अवकाश स्थित पदार्थों की गति से सम्बन्ध रखता है। अणु की शक्ति भी इसमें अन्तर्भूत है।

यह सिद्धान्त चूंकि काल, गति, अन्तराल की स्थिति से सम्बन्धित होने से और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सत्यार्थ प्रकाश के वक्तव्य से सम्बन्धित होने से इस सिद्धान्त पर हम संक्षेप में विचार करेंगे। महर्षि कणाद मुनि ने वैशेषिक दर्शन के सूत्रों में नौ द्रव्यों का उल्लेख किया है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिग् या देश, आत्मा और मन। इसमें 'काल' को एक द्रव्य के रूप में माना है, काल एक कल्पित वस्तु नहीं है। सृष्टि निर्मिती में यह एक महत्त्वपूर्ण घटक है। इसी सन्दर्भ मे हम सापेक्षता का सिद्धान्त संक्षेप में देखेंगे।

आइन्स्टाईन ने दो सिद्धान्त प्रस्तुत किये थे। एक सिद्धान्त भार, विद्युत् एवं गति के सम्बध में था। यह कहता है यदि किसी वस्तु की गति प्रकाश की गति के समान होगी तो वह वस्तु का वर्तन कैसे होगा? इस सिद्धान्त में प्रमुखता यह थी की हम अवकाश और काल की गणना कैसे करे? एक उदाहरण पर विचार करते हैं।

एक व्यक्ति एक चलती रेलगाडी में बैठा पुस्तक पढ़ रहा है उसकी दृष्टि में वह पुस्तक पढ़ रहा है इसलिए स्थिर है। किन्तु दूसरा व्यक्ति जो प्लैटफार्म पर खड़ा है और वह देख रहा है कि वह व्यक्ति, पुस्तक और गाडी १०० किमी/घन्टा की गति से जा रहे हैं।

कल्पना करो कि एक तीसरा व्यक्ति जो विरुद्ध दिशा में अन्य रेल गाड़ी से २० किमी/घन्टा की गति से जाते हुए उस प्रथम व्यक्ति को, पुस्तक को देख रहा है। वह दृश्य उसकी दृष्टि से १२० किमी/घण्टा गति से घूम रहा है। अब कल्पना करो कि चौथा व्यक्ति अन्तराल में बैठा उस प्रथम व्यक्ति को यदि देख सकेगा तो कहेगा की वह व्यक्ति सूर्य की परिधी में कई हजार किमी की गति से घूम रहा है। यह सारा नाप देखने वाले की दृष्टि पर, स्थिति पर निर्भर करता है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो वास्तविकता से अवकाश में नापी जा सके। क्योंकि यह सारा जगत् जो है, जिसमें एक भी ऐसी वस्तु नहीं जो अन्तराल में, स्पेस में स्थिर हो और ऐसा कोई भी पक्का स्थान नहीं जहाँ से अन्तर नापा जा सके।

परन्तु एक पक्की चीज है, उसका अस्तित्व है, उसे प्रकाश की गति कहते हैं। काल और समय। कल्पना करो एक कार आपकी ओर ३० मीटर प्रति सैकण्ड की गति से आ रही है। सामान्य ज्ञान ऐसा कहता है कि क्योंकि वह कार ३० मी./से. की गति से आ रही है तो उसकी हेडलाईट उससे अधिक ३० मी./से. से आएगी। यह धारणा गलत है। क्योंकि वस्तु की गति कुछ भी हो, प्रकाश की गति वही होती है। इसलिए आकाश में ब्रह्माण्ड में कोई भी वस्तु हो और उसकी स्वयं की गति कुछ भी हो, प्रकाश की गति वही रहती है। इसके लिए अन्तर और समय बदलना अनिवार्य है। यही आईन्स्टाईन का प्रसिद्ध सिद्धान्त है कि काल स्थिर नहीं है, उसकी गति एक दूसरे प्रेक्षक के लिए अलग है।

आईन्स्टाईन का दूसरा सिद्धान्त है कि वस्तुओं की गति विशेष गुरुत्व शून्य अवकाश की परिस्थिति में क्या होगी? जो भार, विद्युत् और काल पर आधारित है। $E=mc^2$

जैसे ही वस्तु गतिमान होती है उसका भार और शक्ति बढती है और अन्तर कम हो जाता है गति की दिशा में। यदि यह वस्तु प्रकाश की गति से जाय, तो उसमें प्रचण्ड भार एवं शक्ति होगी और अन्तर शून्य होगा। इसका यही

अर्थ है कि प्रकाश की गति सर्वोच्च है। यह गति है ३० कोटि मीटर प्रति सै.

महर्षि दयानन्द सरस्वती तो काल के जानने वालों में शीर्षस्थ स्थान पर रहे हैं। वे सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय दोनों को ठीक से जानते थे। वे जानते थे कि प्रलय कैसा होता है और फिर सृष्टि कैसी होती है? प्रलय कैसा होता है इस पर ऋग्वेद के मन्त्र १०-१७-१३ के अर्थ में लिखते हैं ''व्यापक परमेश्वर प्रलय काल में जगत को निगल जाता है और कार्य को कारण रूप में ग्रहण करता है। पदार्थ की स्थिति से वे परिचित हैं।'' ऋग्वेद २-१६-२ के भावार्थ में उन्होने जो कुछ लिखा है वही आइन्स्टाईन महोदय ने ३०/३५ वर्ष के बाद लिखा। (१९१० में)

''हे मुनष्यो! जितना स्थूल वस्तु मात्र संसार में है उतना समस्त बिजुली के बिना नहीं, उसको प्रयत्न से तुम लोग जानो।''

वे कहीं भी आइन्स्टाईन की विद्वत्ता से कम नजर नहीं आते।

डॉ. आचार्य धर्मवीर जी, सम्पादक परोपकारी, ने कहा था- मेरे दयानन्द जितने प्राचीन है उतने ही आधुनिक हैं, यही उनकी विलक्षणता है। महर्षि दयानन्द के साहित्य का विज्ञान की दृष्टि से प्रचार अतिशय कम हुआ है। महर्षि दयानन्द को समझने के लिए हमे आधुनिक विज्ञान भी सीखना पडेगा।

**रो. हाउस नं ३, साई अण्हेन्यु, पिंपके सौदागर,**
**पुणे ( महाराष्ट्र )**

## आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

**लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखायाः परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।**

**अवधिः** - २४-०५-२०१४ तः ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

**स्थानम्** - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्गः, अजमेर-३०५००१, दूरभाषः- ०१४५-२६२१२७०

**योग्यता** - संस्कृते रुचिमन्तः संस्कृत-आचार्याः, अध्यापकाः, संस्कृतछात्राः, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

**शुल्कम्** - ३०० रुप्यकाणि।

**व्यवस्था** - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिनः नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्रीः च आनयेयुः।

**स्वरूपम्**- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यासः,

**विशेष** - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

**डॉ. धर्मवीरः**
अध्यक्षः

**डॉ. निरञ्जन साहुः**
सचिवः
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५**

# सृष्टि–हमारी दृष्टि में

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

**१. हम और हमारा संसार**–

हम संसार में रहते हैं। हमारा संसार से अति निकट का सम्बन्ध है। हम संसार का एक अंग हैं। इस प्रकार हमारे जीवन का स्वरूप संसार के स्वरूप से इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि यह संसार हमारा है और हम संसार के हैं। परन्तु, हम यह नहीं कह सकते कि हमें संसार ने बनाया है अथवा हमने संसार को बनाया है। सत्य कथन यह है कि हम अपने संसार को प्रभावित करते हैं और हमारा संसार हमें प्रभावित करता है। हम संसार को प्रभावित करते हैं और हमारा संसार हमें प्रभावित करता है। हम संसार को बनाते तो हैं परन्तु शत प्रतिशत नहीं। यह संसार भी हमें बनाता है परन्तु शत प्रतिशत नहीं। इससे यह सिद्ध होता है कि संसार का और हमारा पृथक् पृथक् अस्तित्व है (हम और हमारा संसार एक नहीं है, न्यारे न्यारे हैं।'जिज्ञासु') यद्यपि दोनों एक दूसरे से बहुत जुड़े हुए हैं।

**२. संसार में न कोई प्रयोजन, न व्यवस्था सब कुछ आकस्मिक**– संसार है क्या? इस प्रश्न का भिन्न–भिन्न विचारकों ने भिन्न–भिन्न उत्तर दिया है। इन विचारकों का दो भागों में वर्गीकरण किया जा सकता है आस्तिक तथा नास्तिक। आस्तिक वे हैं जो यह मानते हैं कि जगत् का बनाने वाला एक बुद्धिमान्, चेतन व सर्वशक्तिमान् सत्ता है। नास्तिक की सोच दूसरी है। वे किसी भी अभौतिक चेतन सत्ता को नहीं मानते। इन नास्तिकों को भी दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। इनमें से एक वर्ग भले ही एक चेतन सत्ता को नहीं मानता तथापि यह विश्वास रखता है कि इस संसार का संचालन एक ज्ञान शून्य, उद्देश्यहीन सत्ता नित्य अटल नियमों द्वारा करती है। इन लोगों का ऐसा मानना है कि ये नियम अनादि हैं और अपने आप अपना काम करते हैं। किसी भी व्यक्ति में इन नियमों को बदलने अथवा इनका उल्लंघन करने की शक्ति नहीं है।

नास्तिकों का दूसरा वर्ग तो इन अनादि नियमों से भी इन्कार करता है। इनका मत है कि प्रकृति की गतिविधियाँ भी एक अज्ञानी बालक के खेल के समान ही चपलतापूर्ण हैं। जगत् की घटनायें इतनी अस्पष्ट, अनिश्चित तथा अनियमित हैं कि कोई भी व्यक्ति निश्चयपूर्वक यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता कि अगले क्षण क्या घटना घटित होगी। जगत् का व्यवहार निश्चित नहीं है और न ही यह किसी प्रयोजन अथवा योजना का प्रदर्शन करता है। संसार को किसी बुद्धिमान् सत्ता ने किसी सुव्यवस्थित योजना के अनुसार इस प्रकार से नहीं बनाया कि हम यह जान सकें कि एक घटना क्यों व कैसे घटी। संसार तो मात्र एक अंधी तंग गली है। यह कौन बता सकता है कि मनुष्य का नाक दो आँखों के बीच में क्यों बनाया गया अथवा एक मानवीय हाथ की पाँच ही उंगलियाँ क्यों हैं? छह क्यों नहीं? एक गदहे के सिर पर सींग क्यों नहीं होते या एक बकरी के दो ही सींग क्यों होते हैं और रैनासारस का एक सींग क्यों होता है? हम इस विषय में एक ही बात कह सकते हैं कि हम इसे ऐसा ही देखते हैं। ये सब कुछ आकस्मिक है। इसका न कोई कारण है, न कोई तर्क और न कोई उद्देश्य है। कौन कह सकता है कल रैनासारस के चार सींग नहीं होंगे अथवा एक बन्दर की पूँछ पीछे लटकने की बजाए उस के सिर पर उसकी पूँछ नहीं लहरायेगी।

**३. आस्तिकों के दृष्टिकोण की भिन्नता का बीभत्स परिणाम**– जैसे भिन्न–भिन्न नास्तिक न्यारे–न्यारे ढंग से सोचते हैं इसी प्रकार आस्तिक भी कई शिविरों में विभक्त हैं। यद्यपि वे सब यही मानते हैं कि सृष्टि–कर्ता एक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् सत्ता है, तथापि इनका दृष्टिकोण अलग–अलग है। आस्तिक लोग नास्तिकों की भाँति दृढ़ता पूर्वक ऐसा नहीं कहते कि सृष्टि की रचना निष्प्रयोजन हुई है। परन्तु उस प्रयोजन को सुस्पष्ट व निश्चयात्मक रीति से बता पाने में वे कठिनाई अनुभव करते हैं। यह मान लेने पर भी कि परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है, यह प्रश्न तो अनुत्तरित रह जाता है कि इस सृष्टि की रचना क्यों व किस उद्देश्य से की गई। इस प्रश्न का भिन्न–भिन्न विचार वालों ने भिन्न–भिन्न उत्तर दिया है और उनकी व्याख्याओं के कारण समस्या और भी उलझ गई है। आस्तिकों के मध्य विचार–भेद के परिणामस्वरूप घोर घृणा ही उपजी है और इस कारण नास्तिक लोग आस्तिक धार्मिक लोगों पर पाश्विक व्यवहार का खुल्लम खुल्ला दोषारोपण करते हैं। हम यहाँ उन जिहादी युद्धों की कहानियाँ देने का कोई विचार नहीं रखते, जिनसे इतिहास के पृष्ठों के पृष्ठ काले हुए पड़े हैं। हमारे कथन का मात्र इतना ही तात्पर्य है कि संसार के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण का उसके आचार व्यवहार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।

**४. यह निठल्ला चिन्तन**- कुछ बातों में तो मनुष्य एक सा ही व्यवहार करते हैं, भले ही वे आस्तिक हों अथवा नास्तिक, हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई हों। वे एक ही प्रकार से खाते, सोते, हँसते व सन्तानोत्पत्ति करते हैं। एक संस्कृत के कवि ने इसी बात को ऐसा व्यक्त किया है:-

**आहारनिद्रा भयमैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।**

अर्थात् मनुष्य व पशु आहार, निद्रा, भय व सन्तानोत्पन्न करने में तो एक समान हैं। मोटे रूप से खाने, सोने, डरने व सन्तानोत्पत्ति के अतिरिक्त जीवन है भी क्या? परमात्मा है अथवा नहीं, वह सर्वज्ञ है अथवा मूर्ख, वह बलवान् है या निर्बल, मनुष्य तो निश्चित रूप से वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा कि वह सहस्रों पीढ़ियों से करता आया है। अत: इन वैचारिक दृष्टिकोणों पर दार्शनिक परिचर्चा तो एक बौद्धिक उछलकूद मात्र है। इनसे किसी लाभप्रद प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती। जैसे जन साधारण ताश आदि खेलने में अपना समय नष्ट करते हैं इसी प्रकार दार्शनिक प्रवृत्ति के लोग भी दार्शनिक गुत्थियों को सुलझाने में अथवा उन्हें अधिक से अधिक उलझाने में अपना समय खपाते गंवाते हैं। किसी का कथन भी है-

**बेकार मबाश कुछ किया कर।**
**कपड़े ही उधेड़ कर सिया कर।।**

अर्थात् निठल्ला मत बैठा कर । कुछ तो कर भले ही कपड़े उधेड़-उधेड़ कर फिर सिया कर।

**५. ज्ञानी व अज्ञानी की सोच व व्यवहार में भेद**- परन्तु यह विचार बहुत स्थूल है। तनिक विचार करने से व्यवहार का आचरण का अन्तर स्पष्ट सामने आता है। एक सन्त और दुर्जन के दृष्टिकोण में बहुत भेद है। हम तपस्वी त्यागी महात्मा गाँधी तथा एक प्रमत्त मद्यप को एक ही श्रेणी में नहीं रख सकते। दोनों ही भोजन का सेवन करते हैं परन्तु दोनों के भोजन-सेवन का ढंग व भोजन करने का प्रयोजन निश्चय ही अलग-अलग हैं। दोनों की मनोवृत्ति में बहुत नगण्य समानता है। एक विचारक का कथन है:-

**काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।**
**व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।**

अर्थात् बुद्धिमान् शास्त्रों व काव्य के पठनपाठन में आनन्द लेते हैं तथा मूर्ख अनर्थकारी व्यसनों, निद्रा व कलह में ही जीवन बिता देते हैं। तो फिर विचारशील तथा मूर्ख क्या एक समान हैं? निश्चय ही नहीं। बुद्धिमान् अपने जीवन का अथवा संसार का उद्देश्य समझता है। मूर्ख इसे नहीं समझता। विचारशील तो अपने जीवन के प्रयोजन का उचित निर्णय व विचार करके फिर उसे समुचित रीति से प्राप्त करने का प्रयास करता है। मूर्ख तो पशु-समान आँखें मींच कर चलता जाता है। बुद्धिमान् व्यक्ति तो आगे बढ़ता, उन्नति करता है। मूर्ख जीवन भर बुढ़ापे में भी उसी रीति से रहता है। विद्वान् एक संस्कृति का निर्माता है। मूर्ख यह जानता ही नहीं कि संस्कृति का अर्थ क्या है? विद्वान् पशुओं के प्रति दया भाव तथा सत्य भाषण के औचित्य पर विचार करता है। वह जानता है कि दूसरों को पीड़ा पहुँचाना क्यों पाप है अथवा संयम पूर्वक जीवन बिताने के क्या लाभ हैं।

मूर्ख की दृष्टि में सब कुछ एक पाखण्ड है।अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये वह चोरी करता है, लूटता है और हिंसा तक भी करता है। अपने भोजन के लिए, स्वाद के लिए पशुओं को जीवन से वञ्चित करना तो उसके लिये एक साधारण सी बात है परन्तु एक बुद्धिमान् यह सोचता है कि दूसरों में भी उसके समान ही जीवन है और जैसे पीड़ा से उसे यातना प्राप्त होती है वैसे ही यह औरों के लिये भी कष्टप्रद है। इससे वह अहिंसा की सीख ग्रहण करता है । इन दो प्रकार के आचरण की व्याख्या संसार व जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करने से ही हो सकती है।

**६. यदि जगत् मिथ्या है तो यह भागदौड़ किस लिए**- आओ। अब हम संसार के बारे में दृष्टिकोण पर विचार करें। कुछ दार्शनिक ऐसा मानते हैं कि यह जगत् स्वप्न के समान मिथ्या है, सत्य नहीं है। जैसे हम स्वप्न में अपने आपको हाथी पर सवार पाते हैं, परन्तु जब हम अपनी आँखें खोलते हैं तो न हाथी दिखाई देता है, न चाकर होते हैं। हम स्वयं को बिस्तर पर अकेला पड़ा पाते हैं। जैसे हम स्वयं को एक राज-भवन में बैठा हुआ देखते हैं, शीतल पवन चल रही है और सूर्य चमक रहा है परन्तु तथ्य यह है कि न तो वहाँ कोई राज-भवन है, न वायु है और न ही सूर्य है। यह सारा संसार एक भ्रम मात्र है, दलदली भूमि में दिखाई देने वाला प्रकाश सा है, ये सब कुछ स्वप्न के समान मिथ्या है। यह भी एक विचारधारा है। हम तो अपने आचरण पर इस सोच के प्रभाव ही देखना चाहेंगे।

**यह अच्छा ही है कि किसान ऐसा नहीं सोचता**- एक स्वप्न लेने वाला व्यक्ति एक जागते हुए मनुष्य के समान व्यवहार नहीं करता। ठीक इसी प्रकार जो लोग इस जगत् को मिथ्या या झूठा मानते हैं, वे इस जगत् का पूरा

लाभ नहीं उठा सकते। यदि मैं यह मान लूँ कि जिस घर में मैं रहता हूँ वह स्वप्न के समान असत्य है, मिथ्या है तो फिर मैं इसकी सुरक्षा व मरम्मत का ध्यान नहीं रखूँगा। यदि मुझे यह विश्वास हो जाए कि जिन ईटों चूने व गारे से मेरा घर बना है, ये सभी मिथ्या हैं तो फिर मैं इन्हें एकत्र करने का यत्न ही नहीं करूँगा। वह किसान जो भूमि पर हल चलाने व बीज बोने में अपनी पूरी शक्ति लगा रहा है, वह भली प्रकार से यह जानता है कि बीज बोने व भूमि जोतने से अन्ततः वह एक वास्तविक फसल को प्राप्त करेगा, न कि स्वप्न के समान भ्रामक को-मिथ्या को।

**जगत् मिथ्या मानने से सब उन्नति ठप्प ही होगी**- हमारे दार्शनिकों में से कुछ तो अपने स्वप्न दर्शन का राग निरन्तर अलापते रहे परन्तु संसार के जन साधारण ने उनके प्रचार को बहरे कानों से सुना। यह सब अच्छा ही है, कारण इस प्रकार से जीवन के नीचे के स्तर पर तो जगत् का सारा कार्य यथापूर्व चलता जाता है। स्वप्न का जादू तो कुछ बड़े-बड़े लोगों को ही लुभा सका। वह जीवन की वास्तविकता को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। उन्होंने संसार को एक स्वप्न समझा। इसका परिणाम यह निकला कि जीवन के उन ऊपरी भागों में सब प्रकार की उन्नति ठप्प हो गई। वैज्ञानिकों व तत्त्ववेत्ताओं से जो आशा की जाती थी व पूरी न हो सकी। हमने अभी-अभी एक भयानक विश्व-युद्ध (द्वितीय विश्वयुद्ध) का अन्त देखा है जिसमें लाखों लोगों ने अपने जीवन से हाथ धोया है। यदि हिटलर यह मानता होता कि यह संसार एक स्वप्न मात्र है तो क्या वह जर्मनी के प्रभुत्व के लिए इतना संघर्ष करता? यदि इंग्लैण्ड का यह विश्वास होता कि संसार जिस युद्ध में संलिप्त है, यह सब एक स्वप्न मात्र है तो फिर क्या वह हिटलर को पराजित करने के लिए इतने यत्न करता?

**स्वप्न टूटने से ही दुःखों से छुटकारा होगा**- उन वैज्ञानिकों के मनोविज्ञान का विश्लेषण तो करें जिन्होंने इतने व्यापक परीक्षण करके परमाणु बम का आविष्कार किया अथवा उन सैनिकों का दृष्टिकोण तो समझें जिन्होंने युद्ध लड़ते हुए अपने आपको बहुत जोखिम में डाला। उन राजनेताओं की सोच पर विचारिये जिनका सारा ध्यान विजय प्राप्ति के उपायों पर केन्द्रित था। यदि इनमें से कोई इन सब बातों को स्वप्न समान ही मानते तो वे इस ओर एक पग भी आगे न रखते। कई बार ऐसा भी होता है कि स्वप्न में एक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वह स्वप्न देख रहा है और ज्यूँ ही वह अपनी आँखें खोलता है त्यूँ ही उसका स्वप्न टूट जाता है। इसी प्रकार यदि जीवन की सब विपदायें, दुःख दर्द केवल एक स्वप्न ही हैं तब तो इनसे छुटकारा पाने का सर्वोत्तम उपाय या औषधि यही है कि हम उस घड़ी की प्रतीक्षा करें जब हमारी आँखें खुल जायें और हम जागृत अवस्था में आ जायें।

**शेष भाग अगले अंक में.....**

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**

**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

**IFSC - SBIN0007959**

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।**

**सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।**

***प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ***– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

## अतिथि यज्ञ के होता

### ( १६ से ३० अप्रैल २०१४ तक )

१. श्री मेजर रतनसिंह यादव, रेवाड़ी, हरियाणा २. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर ३. श्री यशपाल आर्य, दिल्ली ४. श्री आर्य सूर्यपाल प्रजापति, बीकानेर, राज. ५. श्रीमती मेहता माता जी, अजमेर ६. श्री शिवकुमार शास्त्री, सम्भल, उ.प्र. ७. पं. दत्ताचार्य, आगरा, उ.प्र. ८. श्रीमती गरिमा मल्होत्रा, गुड़गाँव, हरियाणा ९. श्री कृष्णकान्त, दिल्ली १०. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ११. श्रीमती डॉ. अनुपमा, नई दिल्ली १२. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १३. आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक, हरियाणा १४. आर्यसमाज सेक्टर ४०, चण्डीगढ़, पंजाब १५. डॉ. जगदेव विद्यालंकार, रोहतक, हरियाणा १६. श्री अशोक शर्मा, अजमेर १७. श्री निर्मल विज, अजमेर १८. श्री आशीष कुमार सिंह, जयपुर, राज. १९. श्री श्रेयस्कर चौधरी, इन्दौर २०. श्रीमती प्रेरणा चौधरी, इन्दौर २१. सुश्री श्रेयसी चौधरी, इन्दौर २२. मास्टर सुविया चौधरी, इन्दौर २३. सुश्री अनन्या अग्रवाल, इन्दौर २४. श्री रवि अग्रवाल, इन्दौर २५. श्रीमती ऋचा अग्रवाल, इन्दौर २६. श्री एस.के. चौधरी-श्रीमती सुषमा चौधरी, इन्दौर २७. श्री शिव कुमार चौधरी, इन्दौर २८. सुश्री श्रुति चौधरी, इन्दौर २९. मास्टर अनव अग्रवाल, इन्दौर ३०. श्री भार्गव, अजमेर ३१. श्रीमती सरोज आर्य, अजमेर ३२. श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु, हरियाणा ३३. सुश्री वैशाली, सहारनपुर, उ.प्र. ३४. डॉ. रश्मि प्रभा, लखनऊ, उ.प्र. ३५. श्रीमती तारावती आर्या, दिल्ली ३६. श्री राज सचदेवा आर्य, दिल्ली ३७. डॉ. अशोक आर्य, गाजियाबाद, उ.प्र. ३८. श्री राजेन्द्र, नारनौल, हरियाणा ३९. श्री रमेश दत्त दीक्षित, बागपत, उ.प्र. ४०. श्री श्यामसिंह, सहारनपुर, उ.प्र. ४१. श्री एम.आर. गाडेकर, दिल्ली ४२. श्री कर्ममुनि, रेवाड़ी, हरियाणा ४३. श्री जी.के. शर्मा, अजमेर ४४. डॉ. राधेश्याम आर्य, बीकानेर, राज. ४५. श्री राजाराम त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ४६. श्री नवीन मिश्र, अजमेर।

**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

## ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

### ( १६ से ३० अप्रैल २०१४ तक )

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर ३. श्री तन्मय अनिल गुप्ता, अजमेर ४. ह्यूमन वेलफेयर फाउन्डेशन, गुड़गाँव, हरियाणा ५. श्री मयक, दिल्ली ६. श्री जे.पी. दाधिच, अजमेर ७. श्री कुनाल सुगम, कोटा, राज. ८. श्री मयंक, अजमेर ९. श्री निर्मल विज, अजमेर १०. श्री जगपाल यादव, नसीराबाद केन्ट, राज. ११. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १२. श्रीमती नेहा आर्या, फरीदाबाद, हरियाणा १३. श्रीमती प्रेमवती आर्या, अजमेर १४. श्रीमती विद्या देवी, फरीदाबाद, हरियाणा १५. डॉ. रश्मि प्रभा, लखनऊ, उ.प्र. १६. श्रीमती तारावती आर्या, दिल्ली १७. श्रीमती सावित्री मन्त्री, अजमेर १८. श्री अभिषेक शर्मा, भीलवाड़ा, राज. १९. श्री दीनदयाल शर्मा, भीलवाड़ा, राज. २०. डॉ. ओ.पी. शर्मा, नई दिल्ली २१. श्री अमित सुमन महेश्वरी, मुम्बई, महा. २२. श्री काकाणी, अजमेर २३. सुश्री वैशाली, सहारनपुर, उ.प्र. २४. श्री सुशील रावत, अजमेर २५. श्री कश्मीरीलाल सिंहल, गिद्धबाहा, पंजाब।

**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

# Sardar Placed China 18 Years Ago

**पिछले अंक का शेष भाग.....**

**TENUOUS LOYALTY :-** The contact of these areas with us is by no means close and intimate. The people inhabiting these portions have no established loyalty or devotion to India. Even Darjeeling and Kalimpong areas are not free from pro-Mongoloid prejudices. During the last three years, we have not been able to make any appreciable approaches to the Nagas and other hill tribes in Assam. European missionaries and other visitors had been in touch with them, but their influence was, in no way, friendly to India or Indians. In Sikkim, there was political ferment some time ago. It is quite possible that discontent is smouldering there. Bhutan is comparatively quiet, but its affinity with Tibetans would be a handicap. Nepal has a weak oligarchic regime based almost entirely on force; it is in conflict with a turbulent element of the population as well as with enlightened ideas of the modern age.

**DIFFICULT TASK :-** In these circumstances, to make people alive to the new danger or to make them defensively strong are a very difficult task indeed and that difficulty can be got over only by enlightened firmness, strength and a clear line of policy? I am sure the Chinese and their source of inspiration, Soviet Russia, would not miss any opportunity of exploiting these weak spots, partly in support of their ideology and partly in support of their ambitions.

In my judgment, therefore, the situation is one in which we cannot afford either to be complacent or to be vacillating. We must have a clear idea of what we wish to achieve and also of the methods by which we should achieve it. Any faltering or lack of decisiveness in formulating our objectives or in pursuing our policy to attain those objectives is bound to weaken us and increase the threats which are so evident.

Side by side with these external dangers we shall now have to face serious internal problems as well. I have already asked Iengar to send to the External Affairs Ministry a copy of the Intelligence Bureau's appreciation of these matters. Hitherto, the Communist Party of India has found some difficulty in contacting Communist abroad, or in getting supplies of arms, literature, etc. from them. They had to contend with difficult Burmese and Pakistan frontiers on the east or with the long seaboard.

**EASIER ACCESS :-** They will now have a comparatively easy means of access to Chinese Communists and through them to other foreign Communists. Infiltration of spies, fifth columnists and communists would now be easier. Instead of having to deal with isolated Communist pockets in Telengana and Warangal we may have to deal with Communist threats to our security along our northern and north-eastern frontiers where, for supplies of arms and ammunition, they can safely depend on Communist arsenal in China.

The whole situation thus raises a number of problems on which we must come to an early decision so that we can, as said earlier, formulate the objectives of our policy and

decide the methods by which those actions will have to be fairly comprehensive involving not only our defense strategy and state of preparation but also problems of internal security to deal with which we have not a moment to lose. We shall also have to deal with administrative and political problems in the weak spots along the frontier to which I have already referred.

**URGENT PROBLEMS :-** It is, of course, impossible for me to be exhaustive in setting out all these problems. I am however giving below some of the problems, which, in my opinion, require early solution and round which we have to build our administrative or military policies and measures to implement them.

**(a)** A military and intelligence appreciation of the Chinese threat to India both on the frontier and to internal security.

**(b)** An examination of our military position and such redisposition of our forces as might be necessary, particularly with the idea of guarding important routes or areas which are likely to be the subject of dispute.

**(c)** An appraisement of the strength of our forces and, if necessary, reconsideration of our retrenchment plans for the Army in the light of these new threats.

**(d)** A long-term consideration of our defense needs. My own feeling is that unless we assure our supplies of arms, ammunition and armour, we would be making our defense position perpetually weak and we would not be able to stand up to the double threat of difficulties both from the west and north-west and north and northeast.

**(e)** The question of Chinese entry into the UNO. In view of the rebuff which China has given us and the method which it has followed in dealing with Tibet, I am doubtful whether we can advocate its claims any longer. There would probably be a threat in the UNO virtually to outlaw China, in view of its active participation in the Korean War. We must determine our attitude on his question also.

**(f)** The political and administrative steps which we should take to strengthen our northern and north-eastern frontiers. This would include the whole of the border i.e. Nepal, Bhutan, Sikkim, Darjeeling and the tribal territory in Assam.

**(g)** Measures of internal security in the border areas as well as the States flanking those areas such as Uttar Pradesh, Bihar, Bengal and Assam.

**(h)** Improvement of our communication, road, rail, air and wireless, in these areas, and with the frontier outposts.

**(i)** Policing and intelligence of frontier posts.

**(j)** The future of our mission at Lhasa and the trade posts at Gyangtse and Yatung and the forces which we have in operation in Tibet to guard the trade routes.

**(k)** The policy in regard to McMahon Line.

**RELATIONS WITH BURMA :-** These are some of the question which occur to my mind. It is possible that a consideration of these matters may lead us into wider questions of our relationship with China, Russia, America, Britain and Burma. This, however, would be of a general nature, though some might be basically very important, e.g., we might have to consider whether we should not enter into closer association with Burma in order to

strengthen the latter in the dealings with China. I do not rule out the possibility that, before applying pressure on us, China might apply pressure on Burma. With Burma, the frontier is entirely undefined and the Chinese territorial claims are more substantial. In its present position, Burma might offer an easier problem for China and, therefore, might claim its first attention.

I suggest that we meet early to have a general discussion on these problems and decide on such steps as we might think to be immediately necessary and direct quick examination of other problems with a view to taking early measures to deal with them.

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

## ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

**-व्यवस्थापक**

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

**१.** बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

**IFSC-SBIN0007959**

**२.** बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

**IFSC-IBKL0000091**

email : psabhaa@gmail.com

**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

## वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

## पुस्तक - परिचय

**पुस्तक**- अपने स्वरूप की पहचान
**लेखक**- महात्मा चैतन्यमुनि
**प्रकाशक**- आर्य प्रकाशन, ८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६
**मूल्य**- १५/- रु. **पृष्ठ संख्या**- ३२

आज मानव संसार में जन्म लेकर भूल जाता है कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाऊँगा? उसका चिन्तन इसी में रहता है कि संसार का भोग किया जाय, आनन्द का जीवन बिताएँ, चर्वाक् के सिद्धान्तानुसार खाओ, पीओ, मौज उड़ावो। इससे आत्म सन्तोष नहीं मिलता- आत्मा, परमात्मा को समझना आवश्यक है। आत्मा का स्वरूप क्या है? मुक्ति का मार्ग क्या है? अन्तिम लक्ष्य मुक्ति पाना है। ऋषि-मनीषी, योगी आदि ने मुक्ति का ही प्रयास किया है। जन्म-मृत्यु बन्धन है। ध्यान को अपनाएँ, महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश के उद्धरण, उपनिषद्, योग दर्शन, गीता आदि से समझाया गया है। प्रत्येक मनुष्य मुक्ति चाहता है, अष्टांग योग में उपासना- उसके आधार स्तम्भ यम-नियम है। आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। साधक के लिए योगाभ्यास आवश्यक है जो मुक्ति के लिए सहायक है। सत्य-असत्य को समझना आवश्यक है। ऋग्वेद, यजुर्वेद के मन्त्रों से मुक्ति के मार्ग की पुष्टि की है। लेखक का प्रयास मुक्ति मार्ग हेतु उत्तम है। कठोपनिषद्-नचिकेता के प्रश्न जग विख्यात् हैं।

अशुद्धियाँ मुद्रण में रही हैं- भविष्य के लिए आवश्यक है- पृष्ठ १३ पर- पूर्वाक्त, पृष्ठ १९ पर- होन, पृष्ठ २७ में नगर, पृष्ठ २९ से, पृष्ठ ३१- प्यार।

पूर्वोक्त, होने, नजर, के, से, प्यास होना चाहिए।

**- देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर**

## ईश्वर

**- महेन्द्रसिंह आर्य**

अनादि तुम, निरान्त तुम,
प्रचण्ड तुम, प्रशान्त तुम।

सूक्ष्म तुम, विराट् तुम,
हो सृष्टि के सम्राट तुम।

इस सृष्टि का निर्माण तुम,
इस सृष्टि का संहार तुम।

अनन्त तुम, अजन्म तुम,
हो अजर अमर अभय तुम।

व्यापक हो, निराकार तुम,
सम्पूर्ण निर्विकार तुम।

न्यायी हो दयालु हो तुम,
अनुपम हो कृपालु हो तुम।

हो सत्य तुम, हो नित्य तुम,
आनन्द तुम, पवित्र तुम।

भगवान् हो सर्वेश तुम,
आधार सब के ईश तुम।

अन्तर में विद्यमान तुम,
हो सर्वशक्तिमान् तुम।

**- मुम्बई**

## सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य गुरुकुल सलखिया, जिला रायगढ़, छत्तीसगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी रामानन्द को उनकी अनधिकृत, अवैध, अनुचित व अनुशासनहीनता पूर्ण प्रवृत्तियों व गतिविधियों के कारण परोपकारिणी सभा ने गुरुकुल सलखिया के समस्त पद एवं दायित्व से मुक्त कर दिया है।

सभी आर्यजन व दानदाताओं से निवेदन है कि स्वामी रामानन्द को परोपकारिणी सभा से सम्बन्धित आर्य गुरुकुल सलखिया के लिए कोई धन राशि अथवा अन्य सामान दान के रूप में प्रदान न करें।

**- मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

# वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

## महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

## वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| १८५. | श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.) | |
| १८६. | मोटापा (सी.डी.) | ४०.०० |
| १८७. | योगनिद्रा (सी.डी.) | ३०.०० |
| १८८. | ध्यान (सी.डी.) | |
| १९९. | योगनिद्रा (कैसेट) | ३०.०० |
| १९०. | ध्यान (कैसेट) | ३०.०० |

### श्री रावसाहब रामविलास शारदा

| | | |
|---|---|---|
| १९१. | आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र) | १००.०० |

### डॉ. रामप्रकाश आर्य

| | | |
|---|---|---|
| १९२. | महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं) | २५०.०० |

### महर्षि गार्ग्य

| | | |
|---|---|---|
| १९३. | सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः) | २५.०० |

### डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

| | | |
|---|---|---|
| १९४. | वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्) | २५.०० |
| १९५. | डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया) | ५१.०० |
| १९६. | डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण) | ३१.०० |

### महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

| | | |
|---|---|---|
| १९७. | वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग) | १६०.०० |
| १९८. | वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग) | १६०.०० |
| १९९. | महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग) | २००.०० |
| २००. | महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग) | २५०.०० |

### Prof. Tulsi Ram

| | | |
|---|---|---|
| 201. | The Book Of Prayer (Aryabhivinaya) | 35.00 |
| 202. | Kashi Debate on Idol Worship | 20.00 |
| 203. | A Critique of Swami Narayan Sect | 20.00 |
| 204. | An Examination of Vallabha Sect | 20.00 |
| 205. | Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi) | 20.00 |
| 206. | Bhramochhedan (New Edition) | 25.00 |
| 207. | Bhranti Nivarana | 35.00 |
| 208. | **Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati | 20.00 |
| 209. | Bhramochhedan | 5.00 |
| 210. | Chandapur Fair | 5.00 |

### DR. KHAZAN SINGH

| | | |
|---|---|---|
| 211. | Gokaruna Nidhi | 12.00 |

### DEENBANDHU HARVILAS SARDA

| | | |
|---|---|---|
| 212. | Life of Dayanand Saraswati | 200.00 |

### SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

| | | |
|---|---|---|
| 213. | Dayanand and His Mission | 5.00 |
| 214. | Dayanand and interpretation of Vedas | 5.00 |
| २१५. | पवित्र धरोहर (सी.डी.) | ५१.०० |

### आचार्य उदयवीर शास्त्री

| | | |
|---|---|---|
| २१६. | जीवन के मोड़ (सजिल्द) | २५०.०० |

**अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।**

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| | **श्री गजानन्द आर्य** | |
| २१७. | वेद सौरभ | १००.०० |
| २१८. | Gokarunanidhi (Eng.) | २५.०० |
| | **डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)** | |
| २१९. | मनुस्मृति | ३००.०० |
| २२०. | महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति | १५०.०० |
| | **सत्यानन्द वेदवागीशः** | |
| २२१. | दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड) | ३००.०० |
| २२२. | दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड) | ३५०.०० |
| | **डॉ. वेदपाल सुनीथ** | |
| २२३. | माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द) | ५०.०० |
| २२४. | शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द) | ७०.०० |
| २२५. | शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द) | १५०.०० |
| २२६. | यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण) | ५०.०० |
| २२७. | यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण) | २५.०० |
| | **आचार्य सत्यव्रत शास्त्री** | |
| २२८. | उणादिकोष | ८०.०० |
| २२९. | दयानन्द लहरी | ५०.०० |
| | **प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार** | |
| २३०. | वेदाध्ययन (भाग–१) | ६.०० |
| २३१. | वेदाध्ययन (भाग–२) | ७.०० |
| २३२. | वेदाध्ययन (भाग–१०) | ६.०० |
| २३३. | प्रार्थना सुमन | ४.०० |
| २३४. | ईश्वर! मुझे सुखी कर | |
| २३५. | कौन तुझको भजते हैं? | ८.०० |
| २३६. | पावमानी वरदा वेदमाता | ९.०० |
| २३७. | प्रभात वन्दन | ६.०० |

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| २३८. | भक्ति भरे भजन | ११०.०० |
| २३९. | विनय सुमन (भाग–३) | ६.०० |
| २४०. | वेद सुधा | ८.०० |
| २४१. | वेद पढ़ो और पढ़ाओ | १००.०० |
| २४२. | वैदिक रश्मियाँ (भाग–२) | ६.०० |
| २४३. | वैदिक रश्मियाँ (भाग–३) | ५.०० |
| २४४. | वैदिक रश्मियाँ (भाग–४) | ९.०० |
| २४५. | वैदिक रश्मियाँ (भाग–५) | ६.०० |
| २४६. | Quest for the Infinite | 20.00 |
| २४७. | वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार) | १५०.०० |
| | **श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु** | |
| २४८. | गंगा ज्ञान धारा (भाग–१) | |
| २४९. | गंगा ज्ञान धारा (भाग–२) | १६०.०० |
| २५०. | गंगा ज्ञान धारा (भाग–३) | १७०.०० |
| २५१. | अमर कथा पं. लेखराम | ६०.०० |
| २५२. | कवि मनीषी पं. चमूपति | १६०.०० |
| २५३. | कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में | २००.०० |
| २५४. | निष्कलंक दयानन्द | १६०.०० |
| २५५. | मेहता जैमिनी | १५०.०० |
| २५६. | कुरान वेद की छांव में | १५०.०० |
| २५७. | जम्मू शास्त्रार्थ | ३०.०० |
| २५८. | महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव | २०.०० |
| २५९. | श्री रामचन्द्र के उपदेश | २५.०० |
| २६०. | धरती हो गई लहुलुहान | ३०.०० |
| | **विविध ग्रन्थ** | |
| २६१. | नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन | २०.०० |
| २६२. | उपनिषद् दीपिका | ७०.०० |
| २६३. | आर्य समाज के दस नियम | १०.०० |
| २६४. | मद्यनिषेध शिक्षित शतकम् | १५.०० |
| २६५. | आर्यसमाज क्या है ? | ८.०० |
| २६६. | जीवन का उद्देश्य | २०.०० |

| | | |
|---|---|---|
| २६७. | वेदोपदेश | ३०.०० |
| २६८. | सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन | २०.०० |
| २६९. | भगवान् राम और राम–भक्त | २५.०० |
| २७०. | जीवन निर्माण | २५.०० |
| २७१. | १०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म | २५.०० |
| २७२. | दयानन्द शतक | ८.०० |
| २७३. | जागृति पुष्प | ८.०० |
| २७४. | त्यागवाद | २५.०० |
| २७५. | भस्मान्तं शरीरम् | ८.०० |
| २७६. | जीवन मृत्यु का चिन्तन | २०.०० |
| २७७. | ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप | १०.०० |
| २७८. | कर्म करो महान बनो | १४.०० |
| २७९. | अष्टाध्यायी सूत्रपाठ | ५०.०० |
| २८०. | आनन्द बहार शायरी | १५.०० |
| २८१. | वैदिक वीर गर्जना | २५.०० |
| २८२. | पर्यावरण विज्ञानम् | २०.०० |

**DR. HARISH CHANDRA**

| | | |
|---|---|---|
| 283 | The Human Nature & Human Food | 12.00 |
| 284. | Vedas & Us | 15.00 |
| 285. | What in the Law of Karma | 150.00 |
| 286. | As Simple as it Get | 80.00 |
| 287. | The Thought for Food | 150.00 |
| 288. | Marriage Family & Love | 15.00 |
| 289. | Enriching the Life | 150.00 |

**डॉ. वेदप्रकाश गुप्त**

| | | |
|---|---|---|
| २९०. | दयानन्द दर्शन | ६०.०० |
| २९१. | Philoshophy of Dayanand | 150.00 |
| २९२. | महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन | २०.०० |

**श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज**

| | | |
|---|---|---|
| २९३. | आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु | ६०.०० |
| २९४. | आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी) | ४०.०० |

# किशोर व किशोरियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

**१६ से २३ मई २०१४ (छात्रों के लिए) तथा ०१ से ८ जून २०१४ (छात्राओं के लिए)**

**स्थान–ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।**

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर–दल, अजमेर सम्भाग द्वारा जूडो–कराटे, योग–प्राणायाम, संस्कार निर्माण, लाठी, भाला, तलवार, छुरिका, दण्ड–बैठक, सूर्य–नमस्कार, यौगिक क्रियाएँ एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा नैतिक, चारित्रिक व बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर शुल्क – ४०० रु. प्रति व्यक्ति।

**अपील एवं निवेदन –** इस विशाल शिविर के प्रबन्ध, भोजन, आवास, मानदेय, प्रचार आदि पर काफी खर्चा होता है, जिसकी पूर्ति आप और हम सबको मिलकर करनी है। अतः आप सभी दान प्रेमी सज्जनों, संस्थाओं व आर्यसमाज से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद, चैक, ड्राफ्ट अथवा धनादेश आदि द्वारा मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेजें।

**सम्पर्क :– ९४१४४३६०३१, ९४६८६९७४२३, ९७८५१२६८६८,**

**९४१४६६७३८१, ०१४५–२४६०१६४ (सभा)**

**यतीन्द्र शास्त्री, व्यायामाचार्य, अजमेर संभाग– संचालक, आर्यवीर–दल, राज.।**

# जिज्ञासा समाधान - ६३

**- आचार्य सोमदेव**

**जिज्ञासा कर्त्ताओं से निवेदन है कि जिज्ञासा भेजने के बाद उत्तर की प्रतीक्षा करें, बार-बार उसी जिज्ञासा को न भेजें। हम यथा समय आपकी जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयत्न करेंगे। - सम्पादक**

**जिज्ञासा** - पूज्य आचार्य सोमदेव जी, आपको मेरा चरण वन्दन।

नम्र निवेदन है कि मैंने 'परोपकारी' के मार्च (द्वितीय) अंक २०१४ में जिज्ञासा समाधान-५९ के अन्तर्गत प्राण शब्द की आपके द्वारा की गई व्याख्या पढ़ी। जैसे-जैसे पढ़ता गया, अनेक दूसरी प्राण सम्बन्धी शंकाएँ बुद्धि में उपजने लगीं। मैं प्राण को यथार्थ रूप से जानने के लिए बहुत ही जिज्ञासु हूँ, कृपया मार्ग दर्शन कीजिए।

**१.** क्या प्राण चेतन है या जड़? अगर चेतन है जैसा आपने कहा, तो फिर केन उपनिषद् का ऋषि ऐसा क्यों कहता है- इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और प्राण की पहुँच उस परमात्मा तक नहीं है क्योंकि ये सभी जड़ हैं।

**२.** अगर जड़ है तो इसे प्रकृति तत्त्वों में क्यों नहीं गिना गया।

**३.** अगर परमात्मा का नाम ही प्राण है जैसा आपने कहा तो फिर कहीं भी किसी शास्त्र में ईश्वर को प्राणवान् क्यों नहीं कहा गया। अनेक जगह आर्ष ग्रन्थों में ईश्वर को अप्राण की संज्ञा दी गई है, केवल आत्मा के साथ जुड़ने से (शरीर अवस्था में) आत्मा को प्राणी शब्द से सम्बोधित किया जाता है, ऐसा क्यों?

**४.** शरीर अवस्था में ही आत्मा को जीवात्मा कहा जाता है, मोक्ष में नहीं। मोक्ष काल में आत्मा केवल आत्मा होता है जैसा मैंने पढ़ा और सुना, यह भी कि मोक्ष में प्राण का सम्बन्ध आत्मा से छूट जाता है तो फिर प्राण एक देशी है? प्राण सम्बन्ध से ही आत्मा जीवात्मा क्यों हो जाता है?

**५.** श्री उदयवीर शास्त्री जी की शास्त्र व्याख्या में मैंने कहीं पढ़ा है कि प्रलय काल और मोक्ष अवस्था में आत्मा का सम्बन्ध प्राण से नहीं रहता। ऐसा क्यों? आपने तो कहा है प्राण तो ईश्वर ही है किन्तु ईश्वर तो सर्वव्यापकता गुण के कारण सभी जगह आत्मा सहित ओतप्रोत है, तो मोक्ष और प्रलय काल में फिर प्राण स्वरूप ईश्वर क्या आत्मा से अलग हो सकता है।

मनुष्य के मरने पर हम सभी कहते हैं कि अमुक व्यक्ति के प्राण निकल गये। वह अब मृतक शरीर है जहाँ प्राण का आना-जाना बना रहता है, वहाँ प्राण की सर्वव्यापकता कैसे सिद्ध होगी, समष्टि रूप को छोड़कर।

यजुर्वेद के १९वें अध्याय का ६०वाँ मन्त्र प्राण के विषय में क्या कहता है

**ओ३म् ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः**
**स्वधया मादयन्ते।**
**तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति।।**

यजु. १९-६०

मैं संस्कृत विद्या का विद्वान् नहीं हूँ। इस मन्त्र की व्याख्या भी परोपकारी पत्रिका में किसी आर्य विद्वान् द्वारा की गई वह मैंने पढ़ी है, उनकी व्याख्या इस प्रकार है-

जो पितर अर्थात् माता-पिता, गुरु और विद्वान् लोग इत्यादि अग्नि विद्या और सोम विद्या और आनन्द से रहते हैं (तेभ्यः स्वराडसुनीतिम्) अर्थात् उनके हितार्थ स्वराड् जो प्रकाश स्वरूप है वह परमेश्वर, असुनीति अर्थात् प्राण विद्या का प्रकाश कर देता है। हम प्रार्थना करते हैं कि (यथावशं तन्वं कल्पयाति) हे परमेश्वर आप उनके शरीर सदा तेजस्वी और रोग रहित रखिये, जिससे हम उनसे उस विद्या (प्राण विद्या) का ज्ञान प्राप्त कर सके।

यहाँ इस व्याख्या से प्राण विद्या अन्य तत्त्वज्ञान आदि विद्याओं से अलग अति महत्त्व की बताई गई है, उसको अति विशेष विद्या का स्थान दिया गया है, अतः कृपा करके प्राण के बारे में शास्त्रोक्त रहस्य को बताने का कष्ट करें, आपकी अति कृपा होगी।

**- रतनलाल सैनी, म.नं. ७५५/१८, नजदीक राधा कृष्ण मन्दिर, गली दिल्ली वाली, मौहल्ला सैनियान, हिसार-१२५००१ (हरियाणा)**

**समाधान**- आपकी जिज्ञासा परोपकारी मार्च के द्वितीय अंक के जिज्ञासा समाधान-५९ के प्राण सम्बन्धी समाधान को लेकर है। समाधान पढ़ने से आपके अन्दर अनेक नई शंकाऐं उत्पन्न हुई हैं। आपकी जिज्ञासा का समाधान लिखने से पहले हम यहाँ पाठकों की सुविधार्थ और आपके भ्रम निवारणार्थ जो प्राण विषय में लिखा था उसको ज्यों का त्यों यहाँ लिख रहे हैं।

'श्वास शरीर में प्राण वायु को लेने और छोड़ने का नाम है और शरीर को धारण करने वाली जीवनी शक्ति का नाम प्राण है। दोनों में अन्तर विशेष नहीं है यदि अन्तर करना चाहें तो एक में वायु का लेना और छोड़ना क्रिया विशेष है, दूसरे में जीवनी शक्ति विशेष है। प्राण शब्द का भिन्न-भिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न अर्थ मिलता है। मुख्य रूप से शरीर को धारण करने वाला, जीवन का मूल शरीरस्थ वायु विशेष का नाम प्राण शब्द से रूढ़ हो गया है। प्राण शब्द के अन्य अनेक अर्थों में, परमात्मा, आत्मा, मन, इन्द्रियाँ, बल, ऊर्जा, शक्ति, सामर्थ्य, प्रिय व्यक्ति विशेष, चन्द्रमा, सोम, वरुण, अर्क (सूर्य), सविता, अमृत, यज्ञ का उद्गाता, सामवेद, भरत (धारण-पोषण करने वाला), वाचस्पति, रस, दीक्षा, पशु, मनुष्य, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ, समिध (अग्नि), प्राणो वै रेतः, रुद्र, वसिष्ठ (जो अतिशय रूप से धर्म कार्यों में बसने वाला), वाणी, स्वर (शब्द) आदि हैं। ये सब अपने-अपने स्थान पर प्राण तत्त्व हैं। जहाँ जिसका प्रसंग होगा वहाँ प्राण का अर्थ उसी आधार पर होगा।' परोपकारी मार्च द्वितीय-२०१४

**१.** निश्चित रूप से प्राण जड़ है चेतन नहीं। मैंने प्राण को कहीं चेतन नहीं लिखा है। आपने मेरे कौन-से वाक्यों से निकाला कि प्राण चेतन है? हाँ मैंने शरीर को धारण करने हारी जीवनी (जीवन प्रदान करने वाली) शक्ति को प्राण कहा है, इससे आप समझ रहे हो कि मैंने प्राण को चेतन लिखा है, सो यह आपका सोचना उचित नहीं है। इस बात से भी प्राण चेतन सिद्ध नहीं हो रहा। जैसे भूखे व्यक्ति के लिए भोजन जीवन देने वाला है, इस अवस्था में भोजन को लोग जीवन कह देते हैं, जीवनी शक्ति कह देते हैं, ऐसा कहने से भोजन चेतन नहीं हो जाता, ऐसे ही प्राण के विषय में समझें। मैंने मुख्यरूप से शरीस्थ वायु विशेष का नाम प्राण लिखा था, वायु चेतन तत्त्व नहीं है इस बात से भी आप मेरे अभिप्राय को समझ सकते थे।

मैं प्राण को जड़ मानता हूँ इसलिए केनोपनिषद् का प्रमाण देते हुए मुझसे पूछना कि केनोपनिषद् का ऋषि ऐसा क्यों कहता है..... यह प्रश्न उससे पूछा जा सकता है जो प्राण को चेतन मानता हो। वैसे भी प्रसंग प्राण का था आपने इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि को और जोड़ दिया। इस बात को मैं भी स्वीकार करता हूँ कि इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और प्राण की पहुँच उस परमात्मा तक नहीं है क्योंकि ये जड़ हैं। ये सब उस परमात्मा तक पहुँचने में आत्मा के साधन अवश्य बनते हैं। आप इस बात को अपनी कहकर लिखते न कि केनोपनिषद् की तो ठीक था क्योंकि वहाँ केनोपनिषद् में बुद्धि और प्राण पड़ा ही नहीं गया है। वहाँ तो-

**न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि। इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे।**

केन. १.३

**२.** प्राण जड़ है, शरीर में वायु विशेष प्राण है। वायु को प्रकृति तत्त्वों में गिना गया है। स्पर्श तन्मात्रा से वायु बना है, स्पर्श तन्मात्रा अहंकार से, अहंकार महतत्त्व से और महतत्त्व मूल प्रकृति से बना है। इसलिए ये कहना कि इसे प्रकृति तत्त्वों में क्यों नहीं गिना गया, कम जानकारी का द्योतक है।

**३.** मैंने नहीं कहा कि परमात्मा का नाम ही प्राण है। प्राण के अनेक अर्थों में एक अर्थ परमात्मा भी है ऐसा तो कहा है, उसको मानता भी हूँ। 'ही' शब्द लगाने से वक्ता अथवा लेखक का तात्पर्य बदल जाता है, जो कि मैंने इस प्राण विषयक लेख में कहीं भी 'ही' का प्रयोग नहीं किया, इसको आप ऊपर देख सकते हैं। फिर ये कहना कि परमात्मा का नाम ही प्राण है, ऐसा मैं (सोमदेव) मानता हूँ, इस पर विचार करें। मैंने मुख्यरूप से प्राण का अर्थ जो कि रूढ़ हो गया है, शरीर को धारण करने वाला, जीवन का मूल शरीरस्थ वायु विशेष किया है। जिस अर्थ के ऊपर आपका ध्यान ही नहीं गया। इसके अतिरिक्त जो प्राण के अर्थ विद्वानों ने किए व शास्त्रों में मिलते हैं, वे लिखे हैं।

परमेश्वर की एक प्राण संज्ञा है, इसके लिए गायत्री मन्त्र में आये भूः का अर्थ देखें। 'भूरिति वै प्राणः' जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भु है उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास। यहाँ महर्षि ने स्पष्ट प्राण को ईश्वर का वाचक कहा है। जैसे हमारे शरीर का आधार यह भौतिक (सूक्ष्म भूत से बना हुआ) प्राण है वैसे समस्त जगत् का आधार परमात्मा रूपी प्राण है। इस अर्थ में परमात्मा को प्राण कहा गया है, कहा जा सकता है।

अब रही ईश्वर को प्राणवान् न कहने और अप्राण कहने की बात तो ईश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता इसलिए ईश्वर को इस जड़ प्राण की आवश्यकता नहीं है, इसलिए उसको प्राणवान् नहीं कहा व अप्राण की संज्ञा दे दी, ये अर्थ प्रसंग से निकलते हैं, जो प्रसंग को ठीक से नहीं समझता, हाँ भ्रम होता रहता है।

जब हम परमेश्वर को सबका स्वामी देखेंगे, मानेंगे तो उस सब में प्राण भी है, परमेश्वर उस प्राण का स्वामी भी है। जैसे बल के स्वामी को बलवान् कहते हैं, वैसे प्राण के

स्वामी परमात्मा को प्राणवान् कह सकते हैं, इसमें कोई सिद्धान्त की हानि नहीं है।

वैसे आप शास्त्रों की बात करते हैं किन्तु शास्त्र का प्रमाण नहीं देते यदि प्रमाण साथ में दे देते तो प्रसंग को देखकर बात अधिक स्पष्ट हो जाती।

प्राण आत्मा के साथ शरीरावस्था में जुड़ने से आत्मा को प्राणी कहा जाता है वह इसलिए कि शरीर धारण अवस्था में ही आत्मा को प्राणों की आवश्यकता होती जो कि परमेश्वर की व्यवस्था से इसको प्राप्त होते हैं। प्राणों से युक्त होने से इसको प्राणी कह देते हैं, शरीरावस्था से भिन्न प्राणों की आवश्यकता नहीं होती तो उस अवस्था में इसको प्राणी भी नहीं कहते।

**४.** शरीर अवस्था में ही आत्मा को जीवात्मा कहा जाता है मोक्ष में नहीं कहा जाता, ऐसा नहीं है। आत्मा को बन्ध व मोक्ष दोनों ही अवस्थाओं में आत्मा, जीवात्मा, जीव कहा जाता है, कहा जा सकता है। इसके लिए हम यहाँ महर्षि दयानन्द के वचनों का प्रमाण लिखते हैं- **१.** 'शरीर रहित मुक्त जीवात्मा ब्रह्म में रहता है, उसको सांसारिक सुख-दुःख का स्पर्श भी नहीं होता किन्तु सदा आनन्द में रहता है।' **२.** 'जैसे इस समय **बद्ध-मुक्त जीव** हैं वैसे ही सर्वदा रहते हैं।' **३.** वे **मुक्त जीव** मुक्ति में प्राप्त होके ब्रह्म के आनन्द को....। **४. जीव मुक्त** होकर भी शुद्ध स्वरूप, अल्पज्ञ और परिमित गुण, कर्म, स्वभाव वाला रहता है, परमेश्वर के सदृश.....। **५.** मोक्ष में भौतिक शरीर वा इन्द्रियों के गोलक **जीवात्मा** के साथ नहीं रहते....। स.प्र.स. ९ इत्यादि स्थलों पर महर्षि आत्मा, जीवात्मा, जीव तीनों का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए मोक्ष में ही आत्मा संज्ञा होती है अन्यत्र नहीं यह कहना उचित नहीं। हाँ, यह ठीक है कि मोक्ष में आत्मा का सम्बन्ध प्राणों से नहीं रहता और यह भौतिक प्राण एक देशीय है इसमें भी संशय नहीं है।

प्राण सम्बन्ध से ही आत्मा, जीवात्मा कहलाता हो ऐसा नहीं है। बिना प्राण सम्बन्ध के भी जीवात्मा कहा जाता है, यह उपरोक्त ऋषि प्रमाणों से सिद्ध है।

**५.** पं. उदयवीर शास्त्री जी ने जो लिखा कि प्रलय काल व मोक्षावस्था में आत्मा का सम्बन्ध प्राण से नहीं रहता, सो ठीक लिखा है। यहाँ समझने की बात यह है कि इन दोनों अवस्थाओं में भौतिक प्राण का सम्बन्ध जीवात्मा के साथ नहीं रहता। ऐसा इसलिए कि प्रलयावस्था और मोक्ष में आत्मा शरीर रहित रहता है, जब शरीर नहीं है तो प्राण से सम्बन्ध भी नहीं रहता। हाँ, प्राण स्वरूप ईश्वर का सम्बन्ध तो सदा रहता है।

आपकी जिज्ञासा पढ़कर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपने मेरे प्राण सम्बन्धी लेख को समझपूर्वक ठीक से नहीं पढ़ा, यदि पढ़ा होता तो बार-बार यह न लिखते कि 'आपने तो कहा है प्राण तो ईश्वर ही है।' जबकि मैंने इस भाषा का प्रयोग ही नहीं किया। वहाँ मैंने प्राण के अनेक अर्थों में एक अर्थ ईश्वर परक किया है जो कि आर्ष सम्मत है। प्राण स्वरूप ईश्वर सर्वव्यापक गुण वाला है वह आत्मा सहित सबमें ओत-प्रोत है और वह प्रलय व मोक्ष में भी आत्मा सहित सब जगह ओत-प्रोत रहता है। कोई भी पदार्थ उससे कभी भी अलग नहीं रह सकता।

प्राण का एक अर्थ जिस प्राण वायु से हमारा शरीर चलता है वह और एक अर्थ ईश्वर। इन दोनों को जब आप पृथक्-पृथक् समझपूर्वक देखेंगे तो सब ठीक से समझ में आयेगा अन्यथा नहीं।

**६.** इस छठे बिन्दु में भी आपकी वही समस्या है कि आप भौतिक जड़ प्राण व प्राण स्वरूप परमात्मा को पृथक्-पृथक् नहीं समझ पा रहे यदि समझे होते तो ऐसी शंका न करते। इन दोनों को ठीक से समझें और शंका का निवारण कर लेवें।

**७.** जो मन्त्र आपने उद्धृत किया है उसमें बहुत बड़ी प्राण विद्या छिपी हुई हो ऐसा ऋषि भाष्य से तो प्रतीत नहीं होता। इस मन्त्र का देवता (विषय) भी प्राण नहीं है। इसका देवता 'पितर' है। पितर सम्बन्धी इस मन्त्र में प्रार्थना है। यहाँ ऋषि भाष्य हम लिख रहे हैं-

(ये) जो (अग्निष्वात्ताः) अच्छे प्रकार अग्निविद्या को ग्रहण करने तथा (ये) जो (अनग्निष्वात्ताः) अग्नि से भिन्न अन्य पदार्थ विद्याओं को जानने हारे वा ज्ञानी पितृलोग (दिवः) वा विज्ञानादि प्रकाश के (मध्ये) बीच (स्वधया) अपने पदार्थ के धारण रूप क्रिया से (मादयन्ते) आनन्द को प्राप्त होते हैं (तेभ्यः) उन पितरों के लिए (स्वराट्) स्वयं प्रकाशमान् परमात्मा (एताम्) इस (असुनीतिम्) प्राणों को प्राप्त होने वाले (तन्वम्) शरीर को (यथावशम्) कामना के अनुकूल (कल्पयाति) समर्थ करे।

**भावार्थ**- मनुष्यों को परमेश्वर से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि हे परमेश्वर! जो अग्नि आदि की पदार्थ विद्या को यथार्थ जान के प्रवृत्त करते और जो ज्ञान में तत्पर विद्वान् अपने ही पदार्थ के भोग से सन्तुष्ट रहते हैं, उनके शरीर को दीर्घायु कीजिये।

अभी तो इस लेख में हमने आपके भ्रम निवारण करने का प्रयास किया है। प्राण विषय में आगे कभी विस्तार से लिखेंगे। - **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

# पं. चमूपति जी का एक ऐतिहासिक राष्ट्रीय गीत
## रणचण्डी! रणचण्डी जाग!

कि फिर वैरी वैरानल कोप जगाते हैं;
हम धर-धर धैर्य अधीर हुये,
फिर धूर्त दाँत दिखलाते हैं।
आ खड्ग गहे रण आंगन में-
फिर झन-झन हो तलवारों की;
इत हाथ बढ़ें उत सीस कटें,
सुर मिले विजय झनकारों की।
पी वैर वारुणी, वीर बढ़ें-
वैरी दल का विध्वंस करें;
तन परिमल रण भू-धूलि मलें,
सिर घोर-घाव अवतंस धरें।
रिपु-जेता ही बन कर आने का;
बहिन तिलक दे भाई को,
फिर पत्नी-पूजा प्रस्तुत हो,
रणवीर चिता पर आई को।
घुट्टी में मारण मरण मिला,
फिर धन्य-धन्य मातायें हों;
रजपूत-भुजा पर राखी बन,
बसती कुल की ललनाएँ हों।
फिर दुन्दुभि-नाद गुजारें हों,
भेरी-रव की भरमारें हों,
हाथ में किर्च कटारें हों,
भूतल पर शोणित धारें हों।

पं. चमूपति रचित यह गीत स्वराज्य संग्राम में लोकप्रिय रहा। टहलसिंह नाम का एक वीर क्रान्तिकारी इसे फांसी की कोठरी में मस्ती से गाया करता था। बड़े लम्बे समय और यत्न से यह पूरा गीत हमें शुद्ध रूप में अब प्राप्त हुआ है।

**-राजेन्द्र जिज्ञासु**

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०**

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५**

## नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

**कैलेण्डर - ( क ) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ**- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

**( ख ) सन्ध्या सुरभि**- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

**( ग ) गायत्री मन्त्र**- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

**स्टीकर**- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषत: प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

# संस्था - समाचार

**१६ से ३० अप्रैल २०१४**

**यज्ञ एवं प्रवचन** - जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है तथा दोनों ही समय प्रवचन, स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है। इन स्वाध्याय प्रवचनों में वेदमन्त्रों/सूक्तों, ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमशः व्याख्यान किए जाते हैं। इसी क्रम में २० से ३० अप्रैल २०१४ तक **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने प्रातः कालीन प्रवचनों के अन्तर्गत मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय के ब्रह्मचारियों से सम्बन्धित आहार-व्यवहार सम्बन्धी श्लोकों की व्याख्या प्रस्तुत की।

आपने बताया कि मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण बालक का आठवें (गर्भ से लेकर गणना करने पर), क्षत्रिय बालक का ग्यारहवें, वैश्य बालक का बारहवें वर्ष में उपनयन संस्कार किया जाना चाहिए अथवा अपने-अपने वर्णों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के इच्छुक बालक का अर्थात् उत्कृष्ट ब्रह्मतेज की कामना रखने वाले ब्राह्मण का पाँचवें वर्ष में, बल की इच्छा रखने वाले क्षत्रिय का छठे वर्ष में तथा लोक में धन की इच्छा रखने वाले वैश्य का आठवें वर्ष में उपनयन संस्कार करना चाहिए। लेकिन किसी भी परिस्थिति में ब्राह्मण बालक का सोलह वर्ष पर्यन्त, क्षत्रिय के पुत्र का बाईस वर्ष पर्यन्त तथा वैश्य पुत्र का चौबीस वर्ष पर्यन्त उपनयन संस्कार हो ही जाना चाहिए, क्योंकि इस आयु तक उपनयन संस्कार न होने से सावित्री से पतित और आर्यों द्वारा निन्दित होकर वे व्रात्य हो जाते हैं। कहा गया है-

**अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः।**
**सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः।।**

मनु. २/३९

जैसा कि विदित है हमारी पुरातन परम्परा में वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार थी, किन्तु कालान्तर में यह परम्परा विकृत होकर जन्मानुसार बन गई। महर्षि दयानन्द की कृपा से हमने पुनः उसी शुद्ध वैदिक कर्मानुसारी वर्ण व्यवस्था का परिचय प्राप्त किया, जिसमें अध्ययन-अध्यापन करने की प्रवृत्ति वालों को ब्राह्मण, शारीरिक-बौद्धिक सामर्थ्य से राष्ट्र की शत्रुओं से रक्षा करने वालों को क्षत्रिय, वित्तीय-अर्थ के कार्यों में मुख्यतया संलग्न व्यक्ति को वैश्य और प्रयास करने पर भी न पढ़ सकने वाले, उपरोक्त तीनों वर्णों की सेवा करने वाले को शूद्र वर्ण प्रदान किया जाता था। वर्ण प्रदान करने का यह कार्य समावर्तन संस्कार के समय या ब्रह्मचारी के शिक्षा पूरी कर लेने पर गुरु के निर्देशन में किया जाता था। यहाँ प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि जब बालक को वर्ण प्रदान ही नहीं किया गया, तो यहाँ ब्राह्मण बालक, क्षत्रिय बालक आदि सम्बोधन किस आधार पर किया जा रहा है। यहाँ ब्राह्मण आदि सम्बोधन से अभिप्राय ब्राह्मण के बालक से समझना चाहिए। माता-पिता से बालक में गुण आते ही हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखकर उस बालक से उसके पिता के वर्णानुसार व्यवहार किया जाता था, यद्यपि इस बालक के वास्तविक वर्ण का निर्धारण शिक्षा पूरी कर लेने के बाद ही होगा।

इस प्रकार मनुस्मृति के इस प्रकरण में तीनों द्विज वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य) की मेखला की निर्माण सामग्री, यज्ञोपवीत, दण्ड और भिक्षाटन की विधि में थोड़ा-थोड़ा अन्तर किया गया है। इन अन्तरों का प्रयोजन ब्रह्मचारी के कुल का ज्ञान कराना, अपने-अपने वर्णोचित तपश्चर्या कराना, प्रतीत होता है। यहाँ आगे महर्षि मनु ने भोजन विधि के अन्तर्गत स्पष्ट किया कि किसी को जूठा भोजन देना, असमय भोजन करना, अधिक भोजन करना, भोजन कर बिना मुँह धोए कहीं भी जाना, आर्योचित शिष्टाचार के विपरीत है। सदैव भोजन आचमन पूर्वक, उसके गुणों को स्मरण करते हुए करना चाहिए क्योंकि पूजित अन्न सदैव ही बल और ऊर्जा प्रदान करता है किन्तु वही निरादर करके खाया हुआ भोजन इन दोनों को नष्ट कर देता है-

**पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति।**
**अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्।।**

मनु. २/५५

इन दिनों सांयकालीन यज्ञोपरान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी, दार्शनिक ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश का स्वाध्याय नित्यप्रति किया जा रहा है। **आचार्य कर्मवीर जी दर्शनाचार्य** सत्यार्थ प्रकाश की पंक्तियों को बड़े सरल व सूक्ष्म रूप से समझाते हैं और साथ ही विद्यार्थियों के मन

में उठने वाली जिज्ञासाओं का तर्क व प्रमाणों से समाधान भी करते हैं। तीसरे समुल्लास के अन्तर्गत आये हुये न्याय व वैशेषिक दर्शन के सूत्रों के आधार पर सत्य और असत्य को जानने के लिये पदार्थों के स्वरूप की चर्चा करते हुये आपने बताया कि पदार्थों के ठीक-ठीक स्वरूप को जाने बिना हम उनका यथायोग्य उपयोग नहीं ले सकते। मन का लक्षण-

**युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम्** - न्याय दर्शन

अर्थात् जिससे एक समय में एक ही पदार्थ का ज्ञान होता है, दो पदार्थों का नहीं, वह मन है। परन्तु हमें तो लगता है कि व्यक्ति एक साथ कई काम करता है, यथा- जब व्यक्ति वाहन चला रहा होता है तो गियर भी डालता है, एक्सिलेटर, क्लच, ब्रेक दबाना, सामने देखना, हॉर्न बजाना आदि कई कार्य एक साथ करता है, तो इस स्थिति में मन कैसे कार्य करता है? ये सारे कार्य मन के द्वारा एक समय में नहीं किये जाते, क्रमशः ही किये जाते हैं, परन्तु गति की अधिकता होने से ऐसा लगता है कि सब साथ ही हो रहे हों, जैसे पंखे में तीन पंखुड़ियाँ होती हैं लेकिन जब वह तेजी से चलता है तो केवल एक गोला सा दिखाई देता है मानो तीनों पंखुड़ियाँ हर समय हर स्थान हों। मन भी ऐसे ही कार्य करता है। आत्मा के लक्षण बताते हुये न्याय दर्शन का सूत्र

**इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्।**

- न्यायदर्शन

उद्धृत करते हुए कहा कि इच्छा, द्वेष (दुःख से बचना) प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान ये आत्मा के लक्षण हैं।

**सान्निध्य**- योग प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में पधारे स्वामी अमृतानन्द जी ने गुरुकुल ऋषि उद्यान के विद्यार्थियों से उनके जीवन से सम्बन्धित अनुभव बांटे। यदि हम दुःखी हो जाते हैं तो हम स्वयं कहीं न कहीं कमजोर हैं। लोग आध्यात्मिकता और लौकिकता को अलग-अलग मानते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। अध्यात्म के उच्च स्तर को प्राप्त करने के लिये लौकिक व्यवहार में कुशल होना अनिवार्य है। अर्थात् ये इन दोनों में साधन-साध्य का सम्बन्ध है। लोक व्यवहार में हम दूसरों के छोटे-छोटे वाक्यों से दुःखी हो जाते हैं, तो समझना चाहिये कि अभी व्यवहार-कुशल नहीं हुये हैं। जब हम पत्थर से टकरा जाते हैं तो क्या पत्थर को दोष देते हैं, नहीं। क्योंकि हम ठीक वैसे ही जब मनुष्य हमसे (या किसी से) अनुचित व्यवहार करता है तो विवेक उसके पास नहीं होता, वह सोच-समझकर व्यवहार नहीं करता, अर्थात् मनुष्यपन से दूर होता है। यदि व्यक्ति उस समय मनुष्य ही नहीं है तो उसके व्यवहार से दुःखी क्यों होना। दुःखी हो रहे हैं अर्थात् परिस्थिति को ठीक-ठीक समझ नहीं रहे हैं।

**बलिदानी इतिहास हमारा**- आर्यसमाज का इतिहास बलिदानों से भरा पड़ा है। स्वामी श्रद्धानन्द, मा. राजपाल, पं. लेखराम, भाई परमानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द उसी श्रेणी में आते हैं। एक विशेष व्यक्तित्व, जिसने बहुत कम आयु में अपनी विद्वत्ता से अनेक विद्वानों, संन्यासियों को प्रभावित करके ऋषि के विचारों का अनुयायी बनाया। २६ वर्ष की आयु में ही जिन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। २६ अप्रैल को **ब्र. शोभित आर्य** ने गुरुदत्त विद्यार्थी जी के जन्म दिवस पर उनके जीवन की घटनाओं को सुनाते हुये राष्ट्र व धर्म का कार्य करने की प्रेरणा दी। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ऋषि के बलिदान की घटना को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुये और लाहौर में आकर उनके स्मारक के रूप में डी.ए.वी. संस्था की स्थापना की। उन्होंने अपने पुत्र की चिन्ता न करते हुये आर्यसमाज में अद्वितीय कार्य किया।

**ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर**- परोपकारिणी सभा वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए कृत संकल्प है। अतः जब आज समाज में लोग ध्यान आदि क्रियाओं के प्रति जागरूक हो रहे हैं तथा विभिन्न सम्प्रदाय अपनी-अपनी ध्यान-पद्धतियों के माध्यम से उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, ऐसे में वेद, आर्ष-ग्रन्थों व महर्षि दयानन्द के अनुसार 'वैदिक-ध्यान पद्धति' का प्रचार-प्रसार करना सभा के लिए आवश्यक हो जाता है। उपरोक्त उद्देश्य को लेकर सभा के तत्त्वावधान में तीन गोष्ठियाँ आयोजित की जा चुकी हैं, जिसमें आर्यजगत् के शीर्षस्थ योग प्रचारकों, साधकों ने ध्यान पद्धति के लिए गम्भीर संवाद किया। इन गोष्ठियों में वैदिक ध्यान का १५ मिनट का तथा ३० मिनट का प्रारूप तैयार किया गया। इस प्रारूप को सभा जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत है। अतः अपने प्रयासों के अन्तर्गत सभा, ऋषि उद्यान परिसर में 'ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर' के माध्यम से ऐसे प्रशिक्षक तैयार कर रही है जो अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर वैदिक ध्यान का प्रचार-प्रसार कर सकें।

इस क्रम का तीसरा शिविर १३ से २० अप्रैल २०१४ तक आयोजित किया गया। (पिछले दो शिविर अप्रैल व नवम्बर २०१३ में सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं।) इस 'ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर' में २८ शिविरार्थियों ने भाग लिया, जो देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे थे। शिविर में शिविरार्थियों को स्वामी अमृतानन्द जी, डॉ. धर्मवीर जी, स्वामी विष्वङ् जी, स्वामी वेदपति जी, आचार्य कर्मवीर जी, श्री श्यामसिंह जी सहयोगी (सहारनपुर) आदि विद्वान् महानुभावों का विभिन्न कक्षाओं तथा प्रायोगिक ध्यान-प्रशिक्षण आदि में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शिविर में सभी शिविरार्थियों को १५ मिनट की प्रायोगिक ध्यान विधि सविस्तार समझाई गई व इससे सम्बन्धित तथा ध्यान के अन्य पक्षों से सम्बन्धित शंकाओं का भी यथासमय समुचित समाधान किया गया, पुनः प्रत्येक शिविरार्थी से १५ मिनट के ध्यान के प्रारूप का प्रयोगात्मक अभ्यास करवाया भी गया, जिसमें विद्वान् प्रशिक्षक, परीक्षक के रूप में समुपस्थित थे और अन्य शिविरार्थी नवीन साधकों की भाँति। ध्यान की प्रत्येक प्रस्तुति के पश्चात् परीक्षक, भावी-ध्यान प्रशिक्षकों को उनकी त्रुटियों से अवगत कराते थे तथा इन्हीं प्रस्तुतियों के आधार पर उन्हें अंक भी प्रदान किए गए।

पुनः अन्त में सभी शिविरार्थियों की लिखित परीक्षा ली गई। इन दोनों परीक्षाओं के सम्मिलित अंकों के आधार पर ही ४ शिविरार्थियों को उच्च प्रथम श्रेणी तथा १० शिविरार्थियों को प्रथम श्रेणी प्रदान की गई, इस प्रकार कुल १४ शिविरार्थियों को ध्यान-प्रशिक्षक का प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया, शेष शिविरार्थियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

**- ब्र. प्रभाकर व दीपक आर्य**

---

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२**

---

## वैशेषिक-दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, में अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। उसी क्रम में वैशेषिक दर्शन (**स्वामी ब्रह्ममुनि भाष्य सहित**) का **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** द्वारा श्रावण कृष्ण चतुर्थी २०७१ वि. (तदनुसार १५ जुलाई २०१४ ई.) से विधिवत् नियमित सम्पूर्ण अध्यापन कराया जायेगा।

वैशेषिक दर्शन महर्षि कणाद के द्वारा रचित ग्रन्थ है जो कि दस अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। इस दर्शन का विषय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, इन छह पदार्थों के धर्म के तत्त्वज्ञान से अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कहा है। यह द्रव्य के गुण, कर्मादि के लक्षण सहित किसी कार्य द्रव्य के कारणों का विशद् विवेचन प्रस्तुत करता है।

यह दर्शन ५-६ महिनों में पूर्ण होगा।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

# आर्यजगत् के समाचार

**१. महायज्ञ व सत्संग**- स्वामी आत्मानन्द जी सर्वोदय संन्यासी की अध्यक्षता में उच्च माध्यमिक वेद शिक्षा मन्दिर (गुरुकुल) मलारना चोड़ में विशाल महायज्ञ व प्रवचन का आयोजन दि. २ से ६ जून २०१४ को किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में अनेक साधु संन्यासी व विद्वान् पधार रहे हैं। मुख्य आमन्त्रित विद्वान् स्वामी धर्मदेव (हरियाणा), आचार्य सोमदेव (ऋषि उद्यान, अजमेर), पं. भानुप्रकाश शास्त्री व श्रीमती प्रभा शास्त्री (बरेली) रहेंगे।

**२. सम्मानित**- 'ऑल इण्डिया कॉफ्रेन्स ऑफ इंटेलक्चुअल्स' नामक बुद्धिजीवियों की संस्था की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड रत्न' से सम्मानित किया गया। दिनांक २०/४/२०१४ को बड़ोवाला देहरादून में आर.के. इण्डिया ग्रांट स्थित एक होटल में आयोजित किये गये एक विशेष कार्यक्रम में कुलपति को 'धर्म एवं संस्कृति' के क्षेत्र में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में उल्लेखनीय प्रगति एवं समाज सेवा के लिए विशिष्ट कार्य करने पर यह सम्मान दिया गया। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार को माल्यार्पण के अतिरिक्त अंग वस्त्र, स्मृति चिह्न तथा एक प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

**३. प्रवेश प्रारम्भ**- योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ७ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम ४ अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान् एवं चरित्रवान् राष्ट्रभक्त तथा ऋषिभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

**सम्पर्क- आचार्य हरिप्रकाश, ०९४५७३३३४२५, ०९८३७६४३४५८**

**४. आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज**- इस गुरुकुल का १६वाँ वार्षिकोत्सव व द्वितीय समावर्त्तन समारोह बड़े उल्लास के साथ १३ से १५ जून को मनाया जा रहा है। आप सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने आर्यजगत् के मूर्धन्य त्यागी, तपस्वी विद्वद्वरेण्य विद्वज्जन यतिवृन्द विभिन्न प्रान्तों से पधार रहे हैं। गुरुकुलीय ब्रह्मचारिणियों के बौद्धिक भाषण, कविता, गीत आदि एवं शारीरिक व्यायाम, पिरामिड, कराटे आदि के शौर्य पूर्ण कार्यक्रम देखने का सुअवसर प्राप्त होगा। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने इष्ट मित्रों सहित समय पर पधार कर धर्मलाभ को प्राप्त करें और देवबालाओं को आशीर्वाद प्रदान करें।

**५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न**- आर्यसमाज हरिनगर, नई दिल्ली का ४१वाँ वार्षिक उत्सव ११ से १३ अप्रैल २०१४ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भजन, संगीत और वेद उपदेश के माध्यम से तीन दिन तक ज्ञान गंगा प्रवाहित होती रही। श्रद्धालु जन लाभ उठाते रहे। अन्त में प्रधान जी ने सबका धन्यवाद दिया।

**६. पठन-पाठन**- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद, म.प्र. में दि. २३ से २९ जून २०१४ तक सप्त दिवसीय माण्डुक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् के पठन-पाठन का शिविर उपनिषद् के मर्मज्ञ डॉ. धर्मवीर आचार्य (अजमेर) के निर्देशन में हो रहा है। उपनिषद् पढ़ने के इच्छुक जन सम्मिलित हो लाभ उठा सकते हैं। व्यवस्था पूर्ण निःशुल्क है।

**७. प्रवेश प्रारम्भ**- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद, म.प्र. में कक्षा छठवीं एवं सातवीं के योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक १५ जून से १५ जुलाई २०१४ के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। **सम्पर्क करें**-

०९४२४४७१२८८, ०९९०७०५६७२६

**८. वेदान्त दर्शन का अध्यापन**- वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में पिछले एक वर्ष से शिक्षा अष्टाध्यायी, व्याकरण आदि वेदाङ्ग एवं योगदर्शन, न्यायदर्शन आदि उपाङ्गों का अध्ययन-अध्यापन ऋषि प्रणाली से चल रहा है। इसी शृंखला में आध्यात्मिक उन्नति का अनुपम तथा साधना के रहस्यमय ग्रन्थ ग्यारह उपनिषद् एवं तत्पश्चात् सम्पूर्ण वेदान्तदर्शन (ब्रह्मसूत्र) का ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमित रूप से स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य) द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम में आगामी आषाढ़ पूर्णिमा (१२ जुलाई २०१४) से अध्यापन कराया जाएगा।

इन ११ उपनिषदों व वेदान्तदर्शन अध्ययन में लगभग ८-९ मास लगेंगे। इसके साथ-साथ प्रतिदिन सन्ध्या, हवन, आत्मनिरीक्षण, समय-समय पर अनेक मूर्द्धन्य विद्वानों के दार्शनिक प्रवचन एवं योगनिष्ठ गुरुवर्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सान्निध्य, प्रेरणा व उपदेश भी प्राप्त होगा। संस्कृत से अनभिज्ञ विद्यार्थियों को साथ-साथ संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था भी रहेगी। अधिकतम दश (प्रथम आवेदन के आधार पर) विद्यार्थियों को अवसर प्राप्त होगा। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व आध्यात्मिक ग्रन्थ अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्यार्थी अपना पूर्ण परिचय, नाम, आयु, पता, दूरभाष संख्या, शैक्षणिक योग्यता आदि vaanaprastharojad@gmail.com पर ३० जून तक भेजें अथवा सायं ७.३० से ९.०० बजे तक ०९४२६४०८०२६ पर सम्पर्क करें।

**९. सम्मान लोकार्पण**- आर्यजगत् के जानेमाने लेखक, वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता प्रा. डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जिन्होंने किशोर अवस्था से ही अपनी वाणी और लेखनी द्वारा सामाजिक और धार्मिक सुधार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया है, उन्हें यह कार्य करते हुए आज पैंसठ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, उन्होंने समाज के हर वर्ग, हर क्षेत्र में आर्यसमाज की क्रान्तिकारी विचारधारा को पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

रेणापूर ता. जि. लातूर के एक साधारण परिवार में स्व. रामस्वरूप और माता त्रिवेणीबाई के घर डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी का जन्म हुआ। आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर उत्तराखण्ड के एक सुयोग्य स्नातक है। आपने महा. आर्यप्रतिनिधि सभा में उपदेशक रहकर महाराष्ट्र, आन्ध्र, कर्नाटक में आर्यसमाज की दुन्दुभि बजायी है। दि. १ मई २०१४ को महाराष्ट्र दिन के शुभ अवसर पर लातूर में उन पर प्रकाशित 'अभिनन्दन ग्रन्थ लोकार्पण एवं गौरव समारम्भ' का आयोजन किया गया है। इस समारोह में उन्हें एक लाख रु. की गौरव राशि और सम्मान पत्र समर्पित किया जायेगा।

**१०. कार्यशाला सम्पन्न**- पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के १५०वें जन्मदिवस पर उनके जीवन, कार्य एवं विचारों से नई पीढ़ी को परिचित करवाने के उद्देश्य से कार्यशाला का आयोजन रोहिणी, दिल्ली में २७ अप्रैल को किया गया। इस कार्यशाला में पण्डित गुरुदत्त जी की विचारधारा को युवाओं से परिचित करवाने के उद्देश्य से किया गया था इसलिए डॉ. विवेक आर्य द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से उनके जीवन और विचारों को परदे से दिखाया गया था। अन्त में पण्डित जी की लाला लाजपत राय एवं डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित जीवनी, डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा सम्पादित पण्डित जी की अंग्रेजी लेखावली, श्री त्रिलोकचन्द जी द्वारा लिखित संक्षिप्त जीवनी जैसे साहित्य को बड़ी संख्या में युवाओं द्वारा क्रय किया गया।

## शोक समाचार

**११. श्री विजय नारायण आर्य**- का १७ मार्च को ९१ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आपका जन्म ७ मार्च १९८३ को खड़कपुर में हुआ था। आपके पिता पुलिस में थे, इन्टर परीक्षा के साथ पिता के निधन के बाद रेल्वे में नौकरी की। उसी समय से आर्य समाज के सम्पर्क में आये। आपने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया इस कारण कई बार जेल भी जाना पड़ा। आजादी के बाद आपने स्वाधीनता सेनानियों की सुविधायें प्राप्त नहीं की।

आप अपनी सेवायें ईमानदारी से दी। आर्यसमाज बिलासपुर प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के कई पदों पर रहे। आपने देहदान किया, यह अनुकरणीय उदाहरण है।

**१२. आर्यवीर दल अजमेर**- के संचालक श्री यतीन्द्र आर्य की माता श्रीमती बुगली देवी का दिनांक १-५-२०१४ को ऋषि उद्यान, अजमेर में निधन हो गया।

श्रीमती बुगली देवी की अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। परोपकारिणी सभा के समस्त सदस्य एवं परोपकारी परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शान्ति की कामना करते हैं। परिवार के लिए संवेदना प्रकट करते हुए परमेश्वर से सभी के लिए धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

अध्यापक गण

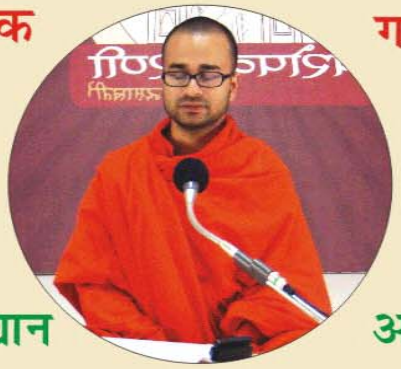

ऋषि उद्यान अजमेर

## वैदिक ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर -३ ( १३ से २० अप्रैल २०१४ )

# लाला रामशरणदास रईस ( उप प्रधान आर्यसमाज मेरठ ) मन्त्री परोपकारिणी सभा

मेरठ निवासी प्रतिष्ठित रईस लाला रामशरणदास स्वामी जी के परम भक्त तथा विश्वासपात्र थे। लाला जी का निधन परोपकारिणी



सभा के प्रथम अधिवेशन के पूर्व ही १० जून १८८३ ई. को हो गया था। अत: इनके स्थान पर पं. गोपाल राव हरि देशमुख को सभा के मन्त्री पद पर नियुक्त किया गया। यद्यपि लाला रामशरण दास परोपकारिणी सभा में अपना सक्रिय योगदान नहीं कर सके, परन्तु वे स्वामी जी के अत्यन्त श्रद्धालु एवं विश्वस्त अनुयायी थे। अपने मेरठ प्रवास के समय स्वामी जी लाला जी की कोठी पर ही ठहरा करते थे। उनके व्याख्यानादि भी वहीं होते थे। लाला जी ने स्वामी जी की नितान्त भक्ति भाव से सेवा की तथा उनके बताये आदर्शों पर चलते रहे।

''परोपकारिणी सभा का इतिहास'' से साभार।

प्रेषक:
**परोपकारिणी सभा**
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
( राजस्थान ) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@©MITTAL.9829797513